शिव आमंत्रण
सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण
RNI:RAJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2024-26
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2024-26
Posted at Shantivan P.O. Dt. 17 to 20 of Each Month
वर्ष : 13, अंक : 10, हिन्दी (मासिक), अक्टूबर 2026, पृष्ठ 16, मूल्य: 17:50 रु.



04 नेपाल आपदा में किया सहयोग...
07 राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री से...

विश्व बंधुत्व रक्तदान महाभियान-2026 बना जनसेवा की मिसाल, 1100 शिविर आयोजित

लोगों की जिंदगी बचाने की ब्रह्माकुमारीज़ की बड़ी पहल, 65000 यूनिट रक्तदान

समाजसेवा प्रभाग की ओर से भारत और नेपाल में चलाया गया चार दिवसीय अभियान

शिव आमंत्रण, आबूरोड

मानवता की सेवा, विश्व बंधुत्व और निःस्वार्थ सहयोग की भावना को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से चलाए गए ब्रह्माकुमारीज़ के समाज सेवा प्रभाग द्वारा विश्व बंधुत्व रक्तदान महाभियान ने देशभर में सेवा और सामाजिक सहभागिता की मिसाल पेश की है। 21 से 25 अगस्त 2026 तक चले इस व्यापक महाभियान के तहत भारत और नेपाल में 1100 से अधिक रक्तदान शिविर आयोजित किए गए। इनमें 65 हजार से अधिक यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। अकेले नेपाल में ही 8694 यूनिट रक्तदान किया गया।



एक रक्त, एक मानवता, एक विश्व परिवार...

महाभियान का मूल संदेश एक रक्त, एक मानवता एक विश्व परिवार रहा। अभियान के माध्यम से यह संदेश दिया गया कि रक्त का संबंध किसी जाति, धर्म, भाषा या क्षेत्र से नहीं होता। रक्त केवल जीवन बचाता है और मानवता को जोड़ता है। एक व्यक्ति द्वारा किया गया रक्तदान किसी दुर्घटना के शिकार व्यक्ति, गंभीर बीमारी से जूझ रहे मरीज, गर्भवती महिला अथवा किसी अन्य जरूरतमंद के जीवन की रक्षा में सहायक बन सकता है।

दादी प्रकाशमणि जी की पुण्य स्मृति को समर्पित सेवा-

प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक बीके अवतार भाई ने बताया कि यह महाभियान राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी की 19वीं पुण्य स्मृति को समर्पित रहा। दादीजी ब्रह्माकुमारीज़ संस्था की पूर्व मुख्य प्रशासिका थीं। उन्होंने अपने जीवन में विश्व बंधुत्व, प्रेम, करुणा, निःस्वार्थ सेवा और आध्यात्मिक जागृति के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका जीवन इस भावना का प्रतीक रहा कि मानव मात्र एक परिवार है और समाज के प्रत्येक व्यक्ति के सुख-दुःख में सहभागी बनना ही सच्ची सेवा है।

2025 में 88378 यूनिट रक्तदान

समाज सेवा प्रभाग द्वारा चलाए जा रहे इस अभियान की सफलता की यात्रा पिछले वर्ष भी उल्लेखनीय रही। 21 से 25 अगस्त 2025 तक आयोजित विश्व बंधुत्व रक्तदान महाभियान में भारत एवं नेपाल में कुल 88378 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया था। इस व्यापक जनसेवा अभियान को उल्लेखनीय रक्तदान योगदान के लिए ओएमजी बुक ऑफ रिकॉर्ड्स द्वारा भी मान्यता प्रदान की गई थी।

रक्तदान का रिकार्ड बनाने वाले दस राज्य

यूनिट	राज्य
5850	महाराष्ट्र
4458	राजस्थान
3974	हरियाणा
2957	कर्नाटक
2929	गुजरात
2809	छत्तीसगढ़
2691	मध्य प्रदेश
2492	दिल्ली
1929	उत्तर प्रदेश
1742	पंजाब



देशभर में व्यापक जनभागीदारी

महाभियान के दौरान देश के विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में ब्रह्माकुमारीज़ के भाई-बहनों, युवाओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं, चिकित्सा संस्थानों, ब्लड बैंक, स्थानीय प्रशासन, जनप्रतिनिधियों और आम नागरिकों ने सक्रिय सहभागिता की। अनेक स्थानों पर युवाओं ने पहली बार रक्तदान करते हुए अभियान में भाग लिया। विशेष रूप से बहनों ने भी बढ़-चढ़कर रक्तदान किया। इससे महिलाओं के रक्तदान को लेकर बनी कई भ्रांतियों को दूर करने में मदद मिली और समाज में यह संदेश गया कि स्वस्थ महिलाएं भी रक्तदान कर सकती हैं। कई शिविरों में स्थानीय जनप्रतिनिधियों एवं प्रशासनिक अधिकारियों ने उपस्थित होकर रक्तदाताओं का उत्साहवर्धन किया और ब्रह्माकुमारीज़ के इस सेवा प्रयास की सराहना की।





मुख्यालय शांतिवन में आयोजित रक्तदान शिविर में 401 लोगों ने रक्तदान किया। इसमें ब्रह्माकुमारी बहनों ने भी बढ़-चढ़कर उत्साह से भाग लिया।

इन राज्यों में भी आयोजित किए गए शिविर

इनके अतिरिक्त आंध्र प्रदेश, ओडिशा, तेलंगाना, पश्चिम बंगाल, झारखंड, तमिलनाडु, हिमाचल प्रदेश, बिहार, उत्तराखंड, केरल, सिक्किम, त्रिपुरा, अरुणाचल प्रदेश, असम, गोवा, जम्मू-कश्मीर, चंडीगढ़, नागालैंड सहित अनेक क्षेत्रों से भी रक्तदाताओं ने अभियान में सहभागिता की।

नेपाल में भी पहुंचा विश्व बंधुत्व का संदेश

विश्व बंधुत्व की भावना को सीमाओं से परे ले जाते हुए नेपाल में भी इस महाभियान को व्यापक जनसहयोग मिला। नेपाल में आयोजित रक्तदान शिविरों के माध्यम से अब तक 8,694 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया है। इन रक्तदान शिविरों ने यह संदेश दिया कि मानवता की सेवा किसी सीमा में बंधी नहीं है।

तकनीक से हुई निगरानी

प्रभाग के मुख्यालय संयोजक बीके बीरेंद्र भाई ने बताया कि इस अभियान के संचालन एवं निगरानी में आधुनिक तकनीक का भी प्रभावी उपयोग किया गया। देशभर में आयोजित रक्तदान शिविरों की गूगल मैप आधारित लोकेशन मॉनिटरिंग की गई। इससे विभिन्न स्थानों पर आयोजित शिविरों की स्थिति और भौगोलिक पहुंच को देखा जा सका।

इस वर्ष की थीम : ज्ञान पान- योग ध्यान- रक्तदान

प्रभाग के वरिष्ठ सदस्य प्रो. गिरीश भाई ने बताया कि समाज सेवा प्रभाग ने रक्तदान को केवल चिकित्सा आवश्यकता के रूप में नहीं, बल्कि निःस्वार्थ सेवा और सामाजिक जिम्मेदारी के रूप में प्रस्तुत किया। अभियान के दौरान 'ज्ञान पान, योग ध्यान, रक्तदान' के संदेश के माध्यम से लोगों को सकारात्मक जीवनशैली, आध्यात्मिक जागरूकता, राजयोग ध्यान तथा समाज के लिए उपयोगी सेवा कार्यों से जुड़ने की प्रेरणा दी गई।

हजारों जीवनों से जुड़ी उम्मीद

रक्तदान महाभियान की सबसे बड़ी उपलब्धि केवल एकत्रित की गई रक्त इकाइयों की संख्या नहीं, बल्कि इसके माध्यम से पैदा हुई मानवता, सहयोग और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना है। एक रक्तदाता का दिया हुआ रक्त किसी अनजान व्यक्ति के जीवन में नई उम्मीद जगा सकता है। यही भावना इस अभियान की आत्मा रही।

प्रभाग के अन्य सेवा अभियान भी जारी

समाज सेवा प्रभाग का प्रयास केवल रक्तदान तक सीमित नहीं है। संस्था द्वारा समाज के विभिन्न वर्गों के लिए स्वास्थ्य शिविर, वरिष्ठ नागरिकों के लिए 'संगम-गौरवपूर्ण वृद्धावस्था एवं सम्मानित जीवन देशव्यापी अभियान', 'स्वर्णिम समाज के लिए ईश्वरीय योजना अभियान', डिजिटल डी-एडिक्शन, मानसिक स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण तथा सामाजिक जागरूकता से जुड़े अनेक सेवा कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं।

देशभर में उत्साह के साथ रक्तदान शिविर आयोजित

समाजसेवा प्रभाग : दादी प्रकाशमणि की 19वीं पुण्य स्मृति दिवस के उपलक्ष्य में आयोजन



छतरपुर, मप्र।

ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर संचालिका बीके शैलजा दीदी के मार्गदर्शन में आयोजित विशाल रक्तदान शिविर में ब्रह्माकुमारी बहनों बीके रमा बहन, बीके रीना बहन सहित 70 से अधिक नारी शक्ति ने रक्तदान कर मिसाल पेश की।



दुर्ग

ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र द्वारा जिला चिकित्सालय में रक्तदान महाअभियान के तहत आयोजित शिविर में 202 रक्तदाताओं ने रक्तदान किया। एसएसपी दुर्ग विजय अग्रवाल, बीके रीटा दीदी, बीके रूपाली दीदी ने रक्तवीरों का हौसला बढ़ाया।



नेपाल



नेपाल



रायपुर

ब्रह्माकुमारीज़ के शहर के सभी सेवाकेंद्रों पर रेडक्रॉस के सहयोग से आयोजित शिविरों में 709 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। शांति सरोवर रिट्रीट सेंटर की संचालिका बीके सविता दीदी का मार्गदर्शन में इन शिविरों का आयोजन किया गया।



वाराणसी, उप्र

ब्रह्माकुमारीज़ के सारनाथ में आयोजित रक्तदान शिविर में 100 रक्तवीरों ने रक्तदान किया। महामंडलेश्वर मुक्तेश्वरी गिरी महाराज सहित बनारस बार के पदाधिकारियों ने रक्तदान कर लोगों को प्रेरित किया। बीके दीपेन्द्र भाई, बीके राधिका दीदी, बीके तापोशी दीदी, बीके अनिता दीदी, बीके विपिन भाई मुख्य रूप से मौजूद रहे।



वड़ोदरा

मांजलपुर सेवाकेंद्र में आयोजित रक्तदान शिविर में महापौर गीताबेन मकवाणा, कॉरपोरेटर माधवी गायकवाड़, केतन भाई पटेल, दीपकभाई अमीन, एडवोकेट ने भाग लिया। इसमें सेवाकेंद्र प्रभारी बीके धीरजबेन सहित अन्य ब्रह्माकुमारी बहनों ने रक्तदान कर मिसाल पेश की।



बैतूल, मप्र

ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा जिले के विभिन्न सेवाकेंद्रों पर आयोजित रक्तदान शिविरों में कुल 312 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। बैतूल सेवाकेंद्र की संचालिका बीके मंजू दीदी ने बताया शिविर का शुभारंभ एसपी कमलेश खरपूसे, तहसीलदार गोवर्धन पाठे, नपा अध्यक्ष पार्वतीबाई, भाजपा प्रदेश महामंत्री अतीत पवार ने किया।



सागर, मप्र

ब्रह्माकुमारीज़ के मकरोनिया सेवाकेंद्र पर आयोजित रक्तदान शिविर में 38 लोगों ने रक्तदान किया। संचालिका बीके छाया दीदी ने बताया कि इसमें ब्रह्माकुमारी बहनों ने भी उत्साह के साथ भाग लिया।

ब्रह्माकुमारीज़ हिसार सबजोन द्वारा पांच दिवसीय रक्तदान अभियान चलाया गया। इसके तहत नौ रक्तदान शिविर आयोजित कर 1060 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, ज्योतिपुरा सहित अग्रोहा, सातरोड़ कलां, अमरदीप कॉलोनी, बालसमंद, मंडी आदमपुर एवं सिसवाल में शिविर लगाए गए। विद्यार्थियों, युवाओं, शिक्षकों, कर्मचारियों एवं नागरिकों ने रक्तदान किया। शिविर हिसार सबजोन की प्रभारी राजयोगिनी बीके रमेश कुमारी के मार्गदर्शन में आयोजित किए गए।



हिसार में में 1060 यूनिट रक्त एकत्रित



दिल्ली

विपिन गार्डन, द्वारका मोड़ स्थित सद्भावना भवन में आयोजित रक्तदान शिविर में 150 लोगों ने पंजीकरण कराया। इसमें 90 रक्तदाताओं ने रक्तदान किया। इस दौरान बीके जानकी दीदी ने रक्तदाताओं को आध्यात्मिक ज्ञान दिया तथा बीके विमला दीदी ने योग कराया।



शांति के नए युग की स्थापना में सेतु बने मीडिया : मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मोहिनी दीदी

▪ मान सरोवार में चार दिवसीय राष्ट्रीय मीडिया महासम्मेलन आयोजित ▪ देशभर से 1500 से अधिक प्रिंट, इलेक्ट्रानिक, रेडियो और वेब मीडिया से जुड़े पत्रकार, संपादक और मीडिया गुरु ने लिया भाग ▪ श्रेष्ठ विश्व के निर्माण हेतु सशक्त मीडिया रहा मुख्य विषय

शिव आमंत्रण, आबूरोड

भागदौड़ की जिंदगी के बीच तनावमुक्त जीवन जीने और मेडिटेशन के टिप्स सीखने के लिए देशभर से 1500 से अधिक मीडियाकर्मी ब्रह्माकुमारीज संस्थान के मान सरोवर परिसर पहुंचे। जहां मीडिया विंग द्वारा चार दिवसीय राष्ट्रीय मीडिया महासम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें प्रिंट, इलेक्ट्रानिक, रेडियो, बेव, सोशल मीडिया से जुड़े संवाददाता, संपादक और जनसंपर्क से जुड़े पत्रकारों ने भाग लिया। नशामुक्ति का भी संकल्प कराया गया, जिसमें सभी मीडियाकर्मियों ने हाथ उठाकर नशा न करने का संकल्प लिया। सम्मेलन श्रेष्ठ विश्व के निर्माण हेतु सशक्त मीडिया विषय पर आयोजित किया गया।

मीडिया के पास समाज को प्रभावित करने की अपार शक्ति है

ब्रह्माकुमारीज संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मोहिनी दीदी ने समापन सत्र में कहा कि मीडिया के पास समाज की सोच और दिशा को प्रभावित करने की अपार शक्ति है। यदि इस शक्ति का उपयोग सकारात्मक चिंतन, मानवीय मूल्यों और शांति के संदेश को आगे बढ़ाने में किया जाए तो मीडिया शांति के नए युग की स्थापना में महत्वपूर्ण सेतु बन सकता है। पत्रकारिता केवल सूचना देने का माध्यम नहीं, बल्कि समाज में विचारों का निर्माण करने और सकारात्मक परिवर्तन की दिशा देने वाली प्रभावशाली शक्ति है। शब्दों में समाज को जोड़ने की शक्ति होती है। यदि पत्रकारिता में संवेदनशीलता और मानवीय मूल्यों को स्थान दिया जाए तो मीडिया लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने का माध्यम बन सकता है।

मैनेजमेंट कमेटी की वरिष्ठ सदस्य राजयोगिनी बीके सुषमा दीदी ने राजयोग का महत्व बताया। विंग के राष्ट्रीय समन्वयक बीके शांतनु भाई ने आभार व्यक्त किया। उपाध्यक्ष बीके सरला दीदी ने आगामी कार्ययोजना प्रस्तुत की। राष्ट्रीय संयोजक बीके निकुंज भाई ने भी संबोधित किया। मधुरवाणी ग्रुप के कलाकारों ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। वक्ताओं का मोमेंटो भेंटकर सम्मान किया गया। आगरा और जबलपुर के बाल कलाकारों ने सांस्कृतिक प्रस्तुति दी।





हमें अंदर से ब्रांडेड बनने की जरूरत है-



दिल्ली से आए वरिष्ठ पत्रकार सरफराज सैफी ने कहा कि क्या मीडिया सिर्फ खबर दिखाएगा यहा खबर के पीछे की सच्चाई भी सबके सामने लाएगा? यह सवाल स्वयं से पूछने की जरूरत है। ब्रह्माकुमारीज पत्रकारों को मूल्यनिष्ठ जीवन जीने की कला सिखा रही है। पत्रकारों को भीतर से सुकून की जरूरत है, जब हमारे भीतर सुकून होगा तो समाज को बेहतर तरीके से आइना दिखा पाएंगे। हमें अंदर से ब्रांडेड बनने की जरूरत है। हम पत्रकारों को बहुत सकारात्मक होने की जरूरत है।

भारत जल्द ही विश्व गुरु बनेगा



ब्रह्माकुमारीज के महासचिव तथा मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष बीके करुणा भाई ने कहा कि भारत जल्द ही विश्व गुरु बनेगा। हम इसी स्वप्न के साथ आगे बढ़ रहे हैं। विश्व के हालात आज हम सभी के सामने हैं। समय को देखते हुए यदि विश्व को कोई नई राह दिखा सकता है तो वह है भारत। जब तक मीडिया क्रांति के रूप में नहीं लेगा, हमारा स्वप्न साकार नहीं होगा।

ध्यान से अष्ट शक्तियों का विकास होता है



देहरादून के वरिष्ठ पत्रकार डॉ. दीन दयाल मित्तल ने कहा कि आध्यात्मिक सशक्तिकरण का अर्थ अपने कार्य को करते हुए भीतर से सशक्त और जागरूक रहना है। विकारों को दूर करते हुए अपनी आंतरिक शक्ति को मजबूत करना है। राजयोग साधना से हमारे अंदर अष्ट शक्तियों का विकास होता है। स्वयं को जानना ही आध्यात्मिक चेतना है। परमात्मा ही दुनिया के नियंता हैं। मीडिया में तथ्यता, सटीकता, निष्पक्षता और सत्यता मूल मानक हैं।

दुनिया में झगड़ों का कारण संवाद की कमी



इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मास कम्युनिकेशन दिल्ली के पूर्व महानिदेशक प्रो. संजय द्विवेदी ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज के इन माउंट आबू के परिसरों में आध्यात्मिकता की आबोहवा बहती है। साहित्य, पत्रकारिता और संचार सभी कलाओं का उद्देश्य लोकमंगल ही है। हम संवाद और संचार की परंपराओं के उत्तराधिकारी हैं। आज दुनिया में झगड़े इसलिए हो रहे हैं कि संवाद नहीं हो पा रहा है।

महासम्मेलन में 50 से अधिक मीडिया विद्वानों ने रखे अपने विचार-

एसएवीपी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय इंदौर की सहायक प्रोफेसर डॉ. वंदना जोशी, चौधरी देवी लाल विश्वविद्यालय, सिरसा के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. अमित कुमार, आईटीएम विश्वविद्यालय ग्वालियर के कुलसचिव डॉ. ओमवीर सिंह, भोपाल से आए वरिष्ठ संपादकत कौशल किशोर चतुर्वेदी, मध्यप्रदेश विधानसभा पत्रकार संघ के प्रदेश अध्यक्ष राधा वल्लभ शारदा, जयपुर की प्रसिद्ध लेखिका नीता जोशी, नॉर्थ महाराष्ट्र यूनिवर्सिटी जलगांव के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. सोमनाथ बड़नेरे, दिल्ली की वरिष्ठ संपादक सरजना शर्मा, भारतीय जनसंचार संस्थान, दिल्ली के राजभाषा सहायक निदेशक अंकुर विजयवर्गीय, डॉ. बीआरए विश्वविद्यालय, आगरा के सहायक प्रोफेसर डॉ. संदीप कुमार, चंडीगढ़ के समाचार संपादक केवल तिवारी, प्रसार भारती न्यूज सर्विस, नई दिल्ली के सीनियर एडिटर डिजिटल उमनाथ सिंह, एएएफटी, नोएडा फिल्म सिटी के डीन डॉ. विकास सिंह ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

इन्होंने भी रखे अपने विचार

- रायपुर देवी अहिल्याबाई विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. मान सिंह परमार ने कहा कि हमें ज्यादा से ज्यादा सकारात्मक खबरों को बढ़ावा देना होगा, ताकि समाज में सकारात्मक माहौल बने।
- मैनेजिंग एडिटर एवं वरिष्ठ पत्रकार यशवंत राणा ने कहा कि एआई ने मानव के लिए कई चुनौतियां भी खड़ी कर दी हैं।
- रायपुर के वरिष्ठ पत्रकार मधुकर द्विवेदी ने कहा कि पत्रकारिता की सबसे बड़ी ताकत उसकी विश्वसनीयता है। मीडिया को जनहित, निष्पक्षता और सत्य को केंद्र में रखते हुए अपनी जिम्मेदारी निभानी चाहिए।
- जयपुर के वरिष्ठ पत्रकार राजेश असनानी ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज संस्थान सामाजिक उत्थान के साथ मीडिया के उत्थान के लिए जो कार्य कर रही है, वह सराहनीय है।
- उदयपुर के मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के प्रमुख डॉ. कुंजन आचार्य ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज के परिसर में आकर हमें एक नई आध्यात्मिक ऊर्जा महसूस होती है।
- माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. संजीव गुप्ता ने इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के बदलते स्वरूप और पत्रकारिता के सामने मौजूद नई जिम्मेदारियों पर विचार व्यक्त किए।
- कल्याणपुर, नेपाल की वरिष्ठ पत्रकार माला कुमारी कर्ण, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर की एसजेएमसी विभागाध्यक्ष डॉ. सोनाली नारगुंडे, रायपुर के वरिष्ठ पत्रकार विशाल यादव, माईगव इंडिया नोएडा के सामग्री एवं वितरण प्रबंधक उदय चंद्र सिंह ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

ब्रह्माकुमारीज़ ने नेपाल आपदा में की एक करोड़ एक लाख रुपये की सहायता

- ब्रह्माकुमारीज़ के काठमांडू जोन के वरिष्ठ भाई-बहनों ने नेपाल के वित्त मंत्री को सहायता राशि का चेक सौंपा
- मानवता के हित में संस्थान का बड़ा कदम, पीड़ितों की भी हर संभव मदद जारी



शिव आमंत्रण, काठमांडू (नेपाल)/आबूरोड

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान ने नेपाल आपदा के पीड़ितों के लिए सहयोग का बड़ा कदम बढ़ाया है। ब्रह्माकुमारीज़ के नेपाल स्थित काठमांडू जोन ने आपदा पीड़ितों की मदद और पुनर्वास के लिए एक करोड़ एक लाख रुपये की सहायता राशि का चेक नेपाल सरकार के वित्त मंत्री स्वर्णिम वागले को सौंपा है। इसके अलावा संस्थान से जुड़े भाई-बहनों द्वारा पीड़ितों की मदद के लिए हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं। उन्हें राशन सामग्री से लेकर अन्य जरूरी सामान मुहैया कराया जा रहा है।

काठमांडू जोन की वरिष्ठ पदाधिकारी बीके किरण दीदी ने बताया कि पिछले दिनों नेपाल में आई भीषण आपदा हर सभी का मन व्यथित है। आपदा के बाद ब्रह्माकुमारीज़ के सभी वरिष्ठ पदाधिकारियों ने मिलकर निर्णय लिया कि ऐसे समय में संस्थान पीड़ितों के लिए हर संभव मदद करेगा। वरिष्ठ सदस्य बीके रामसिंग भाई, बीके किशोर भाई ने बताया कि नेपाल सरकार के वित्त मंत्री स्वर्णिम वागले को एक करोड़ एक लाख रुपये की सहायता राशि का चेक सौंपा गया है। हम सभी चाहते हैं कि नेपाल वासियों ने जो आपदा का दर्द सहा है वह जल्द से जल्द उससे उबर जाएं और फिर से नई शुरुआत करें। इस मौके पर विशेष रूप से वरिष्ठ सदस्य बीके विनोद भाई, बीके दिलप्रसाद पोखरेल और बीके शरद बाबू भाई भी उपस्थित रहे।

बीके कुसुम दीदी ने बताया कि काठमांडू में आपदा पीड़ितों के लिए विशाल श्रद्धांजली सभा आयोजित की गई, जिसमें तीन हजार से अधिक भाई-बहनों ने घंटों तक राजयोग मेडिटेशन के माध्यम से शुभ बाइब्रेशन दिए ताकि पीड़ित इससे जल्द से जल्द मानसिक रूप से उबर सकें।

नेपाल में आई भीषण त्रासदी दुखद है। संस्थान ने सामाजिक दायित्व निभाते हुए पीड़ितों की मदद के लिए एक करोड़ एक लाख रुपये की सहायता राशि का चेक नेपाल सरकार को सौंपा है।
– राजयोगी बीके करुणा भाई, महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़

•••

संस्थान आध्यात्मिक चेतना, जन जागरण के साथ-साथ प्राकृतिक आपदाओं में शुरू से ही मदद करती आई है। फिर चाहे राजस्थान में सूखा हो, गुजरात में आया भीषण भूकंप या नेपाल में आई दुखद त्रासदी। संस्थान से जुड़े भाई-बहनों ने नेपाल त्रासदी में पूरी क्षमता के साथ मदद के हाथ बढ़ाए हैं। परमात्मा से यही प्रार्थना है पीड़ित लोग जल्द से जल्द इस दुख से उबर सकें।
– राजयोगी डॉ. बीके मृत्युंजय भाई, अतिरिक्त महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़

देशभर से पहुंचे आईटी प्रोफेशनल्स ने सीखे स्ट्रेस फ्री लाइफ के मंत्र

मनमोहिनीवन परिसर में आईटी विंग की चार दिवसीय नेशनल कॉन्फ्रेंस आयोजित, देशभर से चार सौ से अधिक आईटी प्रोफेशनल्स ने लिया भाग



शिव आमंत्रण, आबूरोड

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मनमोहिनीवन स्थित ग्लोबल ऑडिटोरियम में आईटी विंग द्वारा चार दिवसीय नेशनल कॉन्फ्रेंस आयोजित की गई। इम्पॉवरिंग द सेल्फ (खुद को सशक्त बनाएं) विषय पर आयोजित इस कॉन्फ्रेंस में देशभर से इंजीनियर, एआई एक्सपर्ट और टेली कम्युनिकेशन से जुड़े चार सौ से अधिक आईटी प्रोफेशनल्स ने भाग लिया। इसका उद्देश्य आईटी फील्ड में वर्कलोड और स्ट्रैस से गुजर रहे प्रोफेशनल्स का जीवन आनंदमय बनाना था। इसमें राजयोग विशेषज्ञ जीवन जीने की कला, समय प्रबंधन, मन प्रबंधन, तनावमुक्त जीवन आदि विषयों पर अपने विचार व्यक्त किए।

कॉन्फ्रेंस के शुभारंभ पर संस्थान के महासचिव राजयोगी बीके करुणा भाई ने कहा कि आज पूरी दुनिया तकनीक के माध्यम से तेजी से आगे बढ़ रही है, लेकिन





तकनीक को दिशा देने वाला मनुष्य स्वयं कितना सशक्त है, यह अधिक महत्वपूर्ण है। कंप्यूटर की क्षमता बढ़ाने के लिए हम लगातार नए सॉफ्टवेयर और अपडेट करते हैं, लेकिन अपने मन को सकारात्मक विचारों और श्रेष्ठ संस्कारों से अपडेट करना भी उतना ही आवश्यक है। व्यक्ति के भीतर शांति, आत्मविश्वास, धैर्य और निर्णय लेने की शक्ति होगी तो वह किसी भी चुनौती का सामना सहजता से कर सकता है।

प्रत्येक आत्मा में हैं दिव्य गुण

ओआरसी की निदेशिका राजयोगिनी बीके आशा दीदी ने कहा कि प्रत्येक आत्मा के भीतर शांति, प्रेम, शक्ति, ज्ञान, पवित्रता और आनंद जैसे गुण मौजूद हैं। परिस्थितियों और नकारात्मक संस्कारों के कारण ये गुण दब जाते हैं। राजयोग का अभ्यास हमें इन मूल शक्तियों से पुनः जोड़ता है। जब व्यक्ति स्वयं को सशक्त करता है तो वह परिस्थितियों का शिकार नहीं बनता, बल्कि परिस्थितियों को सकारात्मक परिवर्तन का माध्यम बना लेता है। यही सच्ची सफलता और वास्तविक इम्पॉवरिंग द सेल्फ है।

मन को सही प्रकार की ऊर्जा देना जरूरी

बीके वर्षा दीदी ने कहा कि राजयोग ध्यान के माध्यम से कुछ समय स्वयं को बाहरी गतिविधियों से अलग कर परमात्म स्मृति में स्थित करना मन को नई ऊर्जा प्रदान करता है। आईटी विंग के मुख्यालय संयोजक बीके यशवंत ने स्वागत भाषण दिया। ओआरसी की मोटिवेशनल ट्रेनर बीके विधात्री बहन ने कहा कि आईटी क्षेत्र में काम करने वाले प्रोफेशनल्स लंबे समय तक स्क्रीन, ईमेल, मीटिंग और लगातार बदलती सूचनाओं से जुड़े रहते हैं। इससे शरीर के साथ मन भी थकान महसूस करता है। मानसिक थकान का समाधान केवल आराम करना नहीं है, बल्कि मन को सही प्रकार की ऊर्जा देना भी है।

मनुष्य का विवेक महत्वपूर्ण

आईविंग के वरिष्ठ सदस्य बीके दिलीप भाई ने कहा कि टेक्नोलॉजी ने मानव जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन किया है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डिजिटल तकनीक आने वाले समय को और अधिक प्रभावित करेंगी, लेकिन तकनीक जितनी शक्तिशाली होगी, उसे इस्तेमाल करने वाले मनुष्य के संस्कार और विवेक उतने ही महत्वपूर्ण होंगे।



दिव्यांगों का जीवन संवारने ब्रह्माकुमारीज़ ने केंद्र सरकार के साथ किया समझौता

दिव्यांग समानता, संरक्षण एवं सुदृढ़ीकरण अभियान का नई दिल्ली में केंद्रीय मंत्री ने किया राष्ट्रीय शुभारंभ

शिव आमंत्रण, नई दिल्ली

दिव्यांगजनों को उनकी दिव्यांगता से नहीं, बल्कि उनकी क्षमता, प्रतिभा, योग्यता और सामर्थ्य से पहचानें। केंद्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ. वीरेंद्र कुमार ने यह आह्वान डॉ. आंबेडकर अंतरराष्ट्रीय केंद्र, नई दिल्ली में दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग, भारत सरकार तथा राजयोग एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन के बीच दिव्यांग समानता, संरक्षण एवं सुदृढ़ीकरण अभियान के शुभारंभ अवसर पर आयोजित समझौता ज्ञापन हस्ताक्षर समारोह में किया। केंद्रीय मंत्री डॉ. कुमार ने कहा कि दिव्यांगजनों का सशक्तिकरण केवल सरकारी प्रयासों से संभव नहीं है। इसके लिए सामाजिक, आध्यात्मिक, शैक्षिक एवं सेवा क्षेत्र से जुड़ी संस्थाओं की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज संस्था का व्यापक नेटवर्क इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। केंद्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्य मंत्री बीएल वर्मा ने अभियान को सामाजिक सेवा, समानता और समावेशिता की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बताया। दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग के संयुक्त सचिव राजीव शर्मा ने कहा कि ध्यान, राजयोग और विश्रांति जैसी गतिविधियां दिव्यांग बच्चों में आत्मविश्वास, एकाग्रता, सकारात्मक सोच और मानसिक कल्याण को बढ़ावा दे सकती हैं।

ब्रह्माकुमारीज की प्रबंधन समिति की सदस्य राजयोगिनी बीके आशा दीदी ने बताया कि संस्था पिछले 18 वर्षों से दिव्यांग बच्चों एवं युवाओं के सशक्तिकरण के लिए कार्य कर रही है। प्रशिक्षित टीमें दो समर्पित वाहनों के माध्यम से विभिन्न विद्यालयों एवं महाविद्यालयों तक पहुंचकर प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करती हैं। दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए ब्रेल आधारित शैक्षणिक सामग्री, शिक्षण बोर्ड, खेल एवं प्रशिक्षण सामग्री विकसित की गई है। माउंट आबू में राष्ट्रीय स्तर के सम्मेलन एवं संगोष्ठियों के माध्यम से भी दिव्यांगजनों को आत्मनिर्भरता और सशक्तिकरण की दिशा में प्रशिक्षण दिया जाता है। इस दौरान सीए बीके ललित भाई, बीके विधात्री बहन, बीके रजनी बहन, बीके प्रीति बहन सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

पवित्रता के पावन बंधन में बंधने का संदेश देता है रक्षा बंधन : राजयोगिनी बीके मुन्नी दीदी



शिव आमंत्रण, आबूरोड

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मुख्यालय शांतिवन में शुक्रवार को हर्षोल्लास के साथ पवित्रता का पावन पर्व रक्षाबंधन मनाया गया। इस मौके पर वरिष्ठ दीदियों ने भाइयों को परमात्म रक्षासूत्र बांधकर अपने जीवन को सदा पवित्रता के बंधन में बांधने और बुराइयों से दूर रहने का संकल्प कराया।

कार्यक्रम में अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मुन्नी दीदी ने कहा कि यदि हम अपना सर्वस्व परमात्मा पर न्यौछावर कर देते हैं तो फिर वह हमारी रक्षा करता है। फिर परमात्मा की जिम्मेदारी हो जाती है। यदि परमात्मा शिव बाबा को अपना बना लिया तो जीवन में कुछ पाना शेष नहीं रह जाता है। रक्षा बंधन हमें जीवन में सदा पवित्र विचारों को अपनाने, पवित्रता के बंधन में बंधने और जीवन में बुराइयों से दूर रहने का संदेश देता है।

पवित्रता का दिव्य संदेश-

संस्थान के महासचिव राजयोगी बीके करुणा भाई ने कहा कि परमात्मा हम सभी मनुष्य आत्माओं को पवित्रता का जीवन बनाने का दिव्य संदेश देकर नई सतयुगी दुनिया में जाने के लायक बनाते हैं। सतयुग में प्रकृति के पांचों तत्व संतुलित अवस्था में रहते हैं जो सदा सुखदायी होते हैं। आज प्रकृति के पांचों तत्वों का संतुलन बिगड़ गया है। इसके चलते प्राकृतिक आपदाएं आ रही हैं। नेपाल में आई भीषण आपदा बहुत दुखदायी है। पीड़ितों के प्रति मेरी गहरी संवेदनाएं हैं, उन्हें श्रद्धांजली अर्पित करता हूं।

अपना जीवन आदर्श बनाएं-

अतिरिक्त महासचिव राजयोगी डॉ. बीके मृत्युंजय भाई ने कहा कि आप सभी यज्ञ रक्षक, विश्व रक्षक, पर्यावरण रक्षक बनकर अपना जीवन आदर्श बनाएं। योग-तपस्या कर अपनी उन्नति करें और दूसरों के लिए प्रेरक बनें। वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ऊषा दीदी ने कहा कि परमात्मा कहते हैं कि मेरे बच्चों सदा पवित्रता के सूत्र में बंधे रहना। चाहे ईश्वरीय सूत्र कहें, पवित्रता का सूत्र कहें, स्नेह का सूत्र कहें, यह सारे सूत्र ही एक सूत्र में बंधे हैं, वह है पवित्रता। पवित्रता ही नई दुनिया का आधार है। सदा आपस में स्नेह के सूत्र में बंधे रहें। आपस में संस्कार मिलन करें। एक-दूसरे के साथ एडजस्ट करें। पवित्रता के बंधन में सदा बंधे रहें।

ये भी रहे मौजूद-

संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी शशि दीदी ने शिव बाबा को भोग लगाया। मधुरवाणी ग्रुप के बीके सतीश भाई व टीम ने रक्षाबंधन पर सुंदर गीत प्रस्तुत किया। संचालन डॉ. बीके सविता दीदी ने किया। ज्ञान सरोवर की निदेशका बीके प्रभा दीदी, ग्लोबल हॉस्पिटल के निदेशक डॉ. प्रताप मिड्ढा, मीडिया विंग के उपाध्यक्ष बीके आत्म प्रकाश भाई, अभियंता प्रभाग के अध्यक्ष बीके मोहन सिंघल, वरिष्ठ राजयोगी बीके प्रकाश भाई, मेडिकल विंग के सचिव डॉ. बनारसी लाल, आवास-निवास के प्रभारी बीके देव भाई, बीके आत्म प्रकाश भाई, समाज सेवा प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक बीके अवतार भाई, डॉ. सतीश गुप्ता, बीके सुधीर भाई, बीके रुक्मिणी दीदी, बीके लीला दीदी, बीके नीलू दीदी सहित वरिष्ठ पदाधिकारी और बड़ी संख्या में भाई-बहनें मौजूद रहे।



आशुतोष राणा से मुलाकात

शिव आमंत्रण, गाडरवार, मप्र। सुप्रसिद्ध अभिनेता आशुतोष राणा के आगमन पर ब्रह्माकुमारी विधि बहन एवं अंजना बहन ने पुष्पगुच्छ भेंट कर अभिनंदन किया। बीके आभा बहन, मीना बहन, काव्या बहन एवं दीपक भाई भी उपस्थित रहे। ब्रह्माकुमारी बहनों ने उन्हें राजयोग, आध्यात्मिकता एवं सकारात्मक जीवनशैली की जानकारी दी।



जया किशोरी से स्नेह मुलाकात

शिव आमंत्रण, आगरा। राजदेवम परिसर में आयोजित सात दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा के दौरान प्रसिद्ध कथावाचिका जया किशोरी से ब्रह्माकुमारी आर्ट गैलरी म्यूजियम की प्रभारी बीके मधु दीदी, बीके माला दीदी एवं श्रुति बहन ने सौहार्दपूर्ण भेंट कर उन्हें ईश्वरीय सौगात भेंट की। साथ आर्ट गैलरी म्यूजियम के दर्शन हेतु निमंत्रण दिया।



शिक्षकों का किया सम्मान

शिव आमंत्रण, छतरपुर। शिक्षक दिवस पर शिक्षकों का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। पीएमश्री केंद्रीय विद्यालय के प्राचार्य मनीष रुसिया, सन्मति विद्या मंदिर के प्राचार्य विनोद कुमार सोनी, पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय बड़ामलहरा के प्रभारी प्राचार्य आर.के. जैन, एंजेल पब्लिक स्कूल की प्राचार्या अंजू अवस्थी, छतरपुर सेवा केंद्र की प्रभारी शैलजा बहन मुख्य रूप से मौजूद रहे।



बेस्ट फीचर फिल्म पुरस्कार मिला

शिव आमंत्रण, संभाजीनगर। रोशनी इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में फिल्म 'गॉडजी समोंनाइजर ऑफ गीता' ने बेस्ट डायरेक्टर और बेस्ट फीचर फिल्म के दो प्रतिष्ठित पुरस्कार हासिल किए। यह फिल्म का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 9वां पुरस्कार है। फिल्म ने विश्व के 80 देशों की करीब 1700 फिल्मों के बीच यह उपलब्धि हासिल की। फिल्म के निर्देशक बीके पम्पोश मिश्रा को बेस्ट डायरेक्टर तथा निर्माता प्रभा मिश्रा को बेस्ट फीचर फिल्म का सम्मान प्रदान किया गया। संभाजीनगर में आयोजित पुरस्कार समारोह में प्रसिद्ध मराठी अभिनेता संजय बनसोडे एवं महाराष्ट्र शासन के जल विभाग के सहायक रवींद्र किसनराव बोरडे ने पुरस्कार प्रदान किए।



स्नेह मुलाकात

पुणे। प्रसिद्ध मराठी अभिनेत्री प्रार्थना बहिरे से राजयोग शिक्षिका एवं समाजसेविका बीके डॉ. सुवर्णा ने स्नेहपूर्ण भेंट की। इस अवसर पर उन्होंने प्रार्थना बहिरे को परमात्मा शिव की सुंदर फ्रेम एवं आध्यात्मिक ज्ञान से संबंधित पुस्तकें भेंट कर सम्मानित किया।

संपादकीय

सत्य और अहिंसा : गांधी के जीवन से आत्मबल की प्रेरणा

महात्मा गांधी का जीवन केवल भारत के स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास नहीं, बल्कि सत्य, अहिंसा, आत्मसंयम और नैतिक साहस का जीवंत संदेश है। उन्होंने यह सिद्ध किया कि किसी भी बड़े परिवर्तन की शुरुआत बाहरी संघर्ष से पहले स्वयं के भीतर से होती है। उनका जीवन हमें सिखाता है कि सत्य को अपनाने के लिए साहस चाहिए और अहिंसा को जीवन में उतारने के लिए आत्मबल। गांधी जी के लिए सत्य केवल बोलने की बात नहीं थी, बल्कि विचार, वाणी और कर्म में उसकी एकरूपता थी। उन्होंने सत्य को जीवन का आधार बनाया। इसी प्रकार अहिंसा उनके लिए केवल हिंसा का अभाव नहीं, बल्कि मन में किसी के प्रति द्वेष, घृणा और प्रतिशोध न रखने की शक्ति थी। विरोधी के प्रति भी सम्मान और सद्भाव बनाए रखना उनके अहिंसक दृष्टिकोण की विशेषता थी। आज के तनावपूर्ण और तेजी से बदलते जीवन में गांधी जी के ये मूल्य और भी प्रासंगिक हो गए हैं। आज हिंसा केवल हथियारों से नहीं, बल्कि क्रोधपूर्ण शब्दों, कटु विचारों, अपमानजनक व्यवहार और सोशल मीडिया पर फैलती नकारात्मकता के रूप में भी दिखाई देती है। ऐसे समय में हमें अहिंसा का अर्थ अपने विचारों की शुद्धता से समझना होगा। ब्रह्माकुमारीज़ के राजयोग का संदेश भी आत्म परिवर्तन और आंतरिक शक्ति पर आधारित है। जब आत्मा स्वयं को शांत, पवित्र और शक्तिशाली चेतन सत्ता के रूप में पहचानती है तथा परमात्मा से संबंध जोड़ती है, तब उसके विचारों में शांति और व्यवहार में करुणा आने लगती है। यही आंतरिक अहिंसा का आधार बन सकती है। गांधी जी ने अपने जीवन से दिखाया कि सत्य के मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति अकेला होकर भी शक्तिशाली हो सकता है। आज आवश्यकता है कि हम सत्य को जीवन का आधार, अहिंसा को व्यवहार का संस्कार और आत्मसंयम को अपनी शक्ति बनाएं। यदि प्रत्येक व्यक्ति पहले अपने मन में शांति और सद्भाव का दीप जलाए, तो परिवार, समाज और राष्ट्र में भी शांति का प्रकाश फैल सकता है। यही गांधी जी के जीवन-संदेश को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

बोध कथा/जीवन की सीख

मन का दीपक

एक नगर में प्रसिद्ध व्यापारी रहता था। उसके पास धन, बड़ा घर और अनेक सुविधाएं थीं, लेकिन उसका मन हमेशा अशांत रहता था। कभी व्यापार में घाटे की चिंता, कभी परिवार की शिकायत, कभी भविष्य का डर और कभी दूसरों से तुलना, उसके मन में विचारों का जैसे मेला लगा रहता था। एक दिन वह नगर के बाहर एक संत के पास पहुंचा और बोला 'मेरे पास सब कुछ है, फिर भी मुझे खुशी नहीं मिलती। मेरा मन हमेशा परेशान रहता है। कृपया मुझे शांति का कोई मार्ग बताइए।

संत ने उसे एक दीपक दिया और कहा- इसे लेकर इस रास्ते पर जाओ।



ध्यान रखना कि दीपक बुझना नहीं चाहिए। व्यापारी दीपक लेकर चल पड़ा। रास्ते में उसे कई लोग मिले। किसी ने उससे बातचीत करने की कोशिश की, किसी ने उसे रोककर अपनी समस्या सुनाई, तो कहीं रास्ते में तेज हवा चलने लगी। व्यापारी हर बार अपने हाथों से दीपक को बचाता हुआ आगे बढ़ता रहा। काफी देर बाद वह संत के पास वापस आया।

संत ने पूछा- रास्ते में तुम्हें क्या-क्या दिखाई दिया? व्यापारी बोला- मुझे कुछ भी ठीक से दिखाई नहीं दिया। मेरा पूरा ध्यान तो दीपक को बचाने में लगा था। संत मुस्कुराए और बोले- यही तुम्हारे जीवन की समस्या का समाधान है। तुम्हारा मन संसार के हर व्यक्ति, हर घटना और हर परिस्थिति में उलझा हुआ है। इसलिए तुम्हारे भीतर का प्रकाश बार-बार बुझने लगता है। जिस दिन तुम अपने अंदर के दीपक को संभालना सीख जाओगे, उस दिन बाहर का अंधकार तुम्हारी शांति को प्रभावित नहीं कर पाएगा। समस्याओं से दूर जाना आवश्यक नहीं है। अपने मन को समस्याओं से दूर रखना सीखो। कर्म करते हुए मन को परमात्मा की याद से जोड़ो। परिस्थिति कैसी भी हो, पहले स्वयं को शांत करो और फिर निर्णय लो। व्यापारी को बात समझ में आ गई। उसने प्रतिदिन आत्मचिंतन और परमात्म-स्मृति में बैठना शुरू किया। धीरे-धीरे उसके विचार शांत होने लगे। अब परिस्थितियां पहले जैसी ही थीं, लेकिन उन्हें देखने वाला उसका दृष्टिकोण बदल गया था।

संदेश : हमारे जीवन में परिस्थितियां हवा की तरह आती-जाती रहती हैं। लेकिन हमारे भीतर शांति, प्रेम और शक्ति का एक दीपक सदैव जल रहा है। आवश्यकता केवल इतनी है कि हम उसे व्यर्थ विचारों, क्रोध, चिंता और मोह की हवाओं से बुझने न दें। राजयोग हमें यही अभ्यास कराता है- मैं शरीर नहीं, शांत स्वरूप आत्मा हूं और परमात्मा मेरा परम साथी है। जब मन परमात्म-स्मृति में स्थित रहता है, तब परिस्थितियां बड़ी नहीं लगतीं और जीवन का हर कदम सहज बन जाता है। सच्ची विजय परिस्थितियों को बदलने में नहीं, अपनी आंतरिक स्थिति को शक्तिशाली बनाने में है।



मेरी कलम से

सुशील भाई (55),
कंस्ट्रक्शन इंजीनियर,
हाजीपुर, बिहार

राजयोग ध्यान से हर क्षेत्र में मिली सफलता, जीवन बना खुशहाल

शराब और मांसाहारी भोजन पूरी तरह से छूट गया

शिव आमंत्रण, आबू रोड। मैं 2006 से ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़कर राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कर रहा हूं। पहले मैंने जीवन में बहुत शराब का सेवन किया। मांसाहारी भोजन भी करता था। जब से ब्रह्माकुमारीज़ का ज्ञान लिया है और राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास करना शुरू किया है तब से मेरा जीवन पूरी तरह से बदल गया है। शराब और मांसाहारी भोजन सभी राजयोग के अभ्यास से छूट गया। राजयोग के अभ्यास करना शुरू ही किया था कि तीन दिन के बाद से ही मुझे अशरीरीपन स्थिति का अनुभव होने लगा। ज्ञान मुरली से मेरा शुरू से बहुत लगाव रहा। जब मैं भाग्य विधाता पुस्तक का अध्ययन करता था तो ऐसा लगता था कि मैं इस दुनिया में ही नहीं हूं। मेरी ज्ञान-योग के प्रति लगन को देखते हुए निमित्त ब्रह्माकुमारी दीदी ने एक माह के बाद से ही मुझे पाठशाला की जिम्मेदारी सौंप दी।

जब पहली बार माउंट आबू में परमात्म मिलन शिविर में आया तभी संकल्प किया कि अब बाबा की सेवा करनी है और तब से जॉब छोड़ दी। आज पाठशाला में रोज 150 से अधिक भाई-बहनें मुरली क्लास में आते हैं। मुझे बाबा ने जीवन में हर तरह से तरक्की दी है। मेरे जीवन का अनुभव है कि जब हम सही तरीके से राजयोग ध्यान को जीवन में अपनाते हैं तो हमारी मानसिक, आध्यात्मिक, आर्थिक और सामाजिक हर रूप में तरक्की होती है। समाज में भी मान-सम्मान बढ़ जाता है। साथ ही यदि हमने अपने जीवन में सुबह को सुधार लिया तो पूरा दिन व्यवस्थित हो जाता है। सारे दिन के कार्य आसान हो जाते हैं। मैं अपने जीवन अनुभव से यही कह सकता हूं कि हमारे संकल्पों में इतनी शक्ति है कि हम जो चाहें वह कर सकते हैं, जरूरत है तो दृढ़ संकल्प के साथ आगे कदम बढ़ाने की। 12वीं तक पढ़ाई करने के बाद भी आज मैंने जीवन के हर क्षेत्र में तरक्की की है। एक परमात्मा ही जीवन का आधार हैं। सबकुछ उन्हें ही सौंपकर चलता हूं। परमात्मा का ही कमाल है कि कारोबार भी बहुत अच्छा चल रहा है। जीवन में कुछ पाना शेष नहीं रह गया है। अलसुबह 3.30 बजे से दिनचर्या शुरू हो जाती है। खुद का जीवन सुधरने के साथ-साथ आज सैकड़ों लोगों को मेरा जीवन देखकर प्रेरणा मिलती है। अनेक लोग मुझसे मार्गदर्शन लेते हैं। यह देखकर बेहद खुशी होती है। मेरा आप सभी से अनुरोध है कि एक बार अवश्य राजयोग का कोर्स करें और अपना जीवन धन्य बनाएं।

आत्मगत स्वभाव द्वारा चैतन्यता स्वरूप में नैसर्गिक आत्मानंद



जीवन का मनोविज्ञान

भाग - 99

- डॉ. अजय शुक्ला, बिहेवियर साइंटिस्ट
गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल, ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड डायरेक्टर
(स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, बंजारी, देवास, मप्र)

शिव आमंत्रण, आबूरोड। धर्मगत आचरण के प्रति निष्ठावान मानवीय संवेदनशीलता का सुदृढ़ पक्ष सदैव अहिंसक जीवन शैली के व्यावहारिक स्वरूप को स्वीकार करते हुए आत्मगत अवस्था को विकसित करने हेतु आध्यात्मिक जगत के अन्तर्गत निरन्तर पुरुषार्थ द्वारा आत्मज्ञान की अनुभूति को चेतना के परिष्कार में सम्बद्ध करके महानतम आत्मिक अवस्था को प्राप्त किया जाता है । आत्मगत स्वभाव की नैसर्गिक अनुकूलता से सम्बन्धित सुमति से सद्गति के रहस्यवाद की पूर्णता का आशावाद जीवन के क्रमबद्ध पर्याय द्वारा अपेक्षित श्रेष्ठतम को गुणानुवाद के व्यापक परिदृश्य में परिणित कर स्वयं को चैतन्यता के सानिध्य में आध्यात्मिक पुरुषार्थ से उच्चतम अवस्था को बनाये रखने में सफल हो जाता है। जीवन के अनुक्रम में मानवीय अन्तदृष्टि से आवद्ध आत्मिक चिंतन का स्वरूप जब समाजवाद, साम्यवाद, अध्यात्मवाद, आत्मवाद से गतिशील होकर बधाईवाद की सुखद परिणिति तब पहुँचता है तब आरम्भिक मनःस्थिति से आत्मगत अवस्था हेतु अध्यात्म से गहरे जुड़े हुए पुरुषार्थ का पवित्रतम परिप्रेक्ष्य- अर्न्तजगत को सम्पूर्ण रूप से आत्मानुभूति के आभा मण्डल से पूर्णतः सराबोर कर देता है।

चैतन्यता स्वरुप में आत्मानंद की सर्वोच्चताः आत्मा से प्राप्त होने वाली उपलब्धि के अन्तर्गत जीवात्मा को सुख, शांति एवं आनंद की अनुभूति होती है जिसमें आत्म ज्ञान की रहस्यमयी स्थितियों तक स्वयं की पहुँच स्थापित कर लेना मनुष्य जाति के



लिए दुर्लभता से पूर्ण सबल, सक्षम और सामर्थ्यशाली पुरुषार्थ होता है जिसके लिए आत्मा का आगमन तथा प्रस्थान दीर्घकालीन समयावधि से आज भी अनवरत रूप से गतिमान बना हुआ है। जीवात्मा द्वारा अध्यात्म के क्षेत्र में किये जाने वाले पुरुषार्थ का सूक्ष्मता से गहन मूल्यांकन करने पर यह ज्ञात हो जाता है कि जीवन की आरम्भिक दशा में आत्म ज्ञान की बोधगम्यता के प्रति आधारभूत प्रयास के अन्तर्गत समझना, सीखना एवं अनुभव करने के साथ स्मृति को परिपक्व बनाते हुए चैतन्यता के वास्तविक स्वरूप तक आत्मगत निर्माण का मूलभूत पक्ष विद्यमान रहता है ।

आत्मिक गुणों एवं शक्तियों की अनंत संभावनाओं से युक्त मानवीय मनोभूमि का धरातल सदा निज चैतन्य स्वरूप की अनुभूति से आत्म आनंद के परिवेश में स्थित रहने की अभिलाषा को परमसत्ता की स्मृतियों से अंतःकरण को सुसज्जित करके मानव आत्म-भाव-भासना की उच्चता को प्राप्त कर निज-निधि-निजानंद स्वरूप में सहज ही स्थित रह सकता है। जीवात्मा द्वारा सूक्ष्म आत्मिक स्वरूप की आत्मानुभूति द्वारा ही आत्मआनंद की प्राप्ति सुनिश्चित होती है जो आत्मगत स्वरूप में सदैव बने रहने से संभव हो जाती है जिसके लिए आध्यात्मिक परिदृश्य में किए जाने वाले आत्मिक परिष्कार से युक्त पुरुषार्थ अति महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में समर्थ होता है। आत्मगत स्वभाव के प्रति निश्चयात्मक मनोवृत्ति के अति सूक्ष्म भाव जगत में सदैव श्रेष्ठ सुमति को जीवन के आचरण द्वारा आत्मसात करके चेतना के चैतन्य स्वरूप की धारणा में स्वयं को सम्पूर्ण सम्बद्धता से समाहित करने की उच्चतम स्थिति, अवस्था और स्वरूप ही आत्म आनंद का आधार है।

आत्मगत स्वभाव की नैसर्गिक उच्चतम परिणितिः जीवात्मा विभिन्न स्थितियों के अन्तर्गत आत्मा के स्वमान अर्थात् आत्मिक स्थिति का स्थायित्व और उसके सानिध्य में गतिशील रहते हुए आत्मिक स्वरूप एवं स्वभाव के अनुसार स्वयं के आत्मगत परिवेश की नैसर्गिक परिणिति का वास्तविक प्रतिपादन सुनिश्चित करती है जिसके परिदृश्य में चेतना का अजर, अमर अविनाशी अचल, अडौल और स्थित प्रज्ञता से युक्त स्वरूप, सदा विद्यमान रहता है। आत्म जगत द्वारा परमात्म सत्ता के प्रति अगाध श्रद्धा, आस्था एवं मान्यता की बोधगम्यता आत्मिक स्वरूप द्वारा अन्तर्मन में प्रस्फुटित होती रहती है जिसमें इच्छा मात्रम, अविद्या... पाना था सो पा लिया.... की विचारगत अनुभूति से भरपूर निष्पक्षता सर्व आत्मिक गुणों एवं शक्तियों की प्राप्ति एक अलौकिक दिव्य खजाने के रूप में व्यावहारिक आत्मानुभूति का आधार बनकर सर्व मानव आत्माओं के प्रति समदृष्टि से युक्त प्रेमपूर्ण व्यवहार का निर्माण सहजता से हो जाता है।

जीवन में आत्मानुभूति हेतु आत्मिक परिष्कार का स्वरूप अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है जिसमें जीवात्मा नैसर्गिक स्वभाव के अनुसार स्वयं को गतिशील बनाये रखती है तथा आत्मिक स्थिति के निर्माण को विकसित करने में भगीरथ प्रयास का योगदान आत्मगत अवस्था के स्थायित्व हेतु अध्यात्म और पुरुषार्थ के रूप में मददगार बन जाता है। आत्मानंद की अनुभूति का आधारभूत कारण, आत्मगत स्वभाव की नैसर्गिक परिणिति है जो विभिन्न स्थितियों के अंतर्गत अध्यात्म और पुरुषार्थ से सम्बद्ध बनाये रखती है जिससे चेतना का उच्चतम स्वरूप, सुमति के प्रति आस्थावाद रहकर आत्मिक सम्पनता की पवित्र अनुभूति से समृद्धशाली बना रहता है।



आप दुनिया में जो बदलाव देखना चाहते हैं, खुद वही बदलाव बनें

महात्मा गांधी, राष्ट्रपिता



इस दुनिया में दुर्लभ कुछ भी नहीं है, अगर उत्साह का साथ न छोड़ा जाए।

आदिकवि महर्षि वाल्मीकि

राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री से लेकर मंत्रियों को बांधा परमात्म रक्षासूत्र



नई दिल्ली

रक्षाबंधन के पावन अवसर पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु को गुरुग्राम ओआरसी की निदेशिका बीके आशा दीदी एवं बीके निकिता दीदी ने परमात्म रक्षासूत्र बांधकर राखी पर्व की शुभकामनाएं दीं। साथ ही राष्ट्रपति को संस्थान द्वारा की जा रही सामाजिक सेवाओं की जानकारी दी। राष्ट्रपति ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा की जा रही सेवाएं सराहनीय हैं। अध्यात्म और मेडिटेशन से लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव आता है।



नई दिल्ली

रक्षाबंधन के पावन अवसर पर 7- लोक कल्याण मार्ग, नई दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से गुरुग्राम स्थित ओआरसी की निदेशिका बीके आशा दीदी, बीके पुष्पा दीदी एवं बीके लक्ष्मी दीदी ने मुलाकात कर परमात्म रक्षासूत्र बांधकर प्रेम, पवित्रता एवं आध्यात्मिक सद्भाव का संदेश दिया। बहनों ने कहा कि रक्षा सूत्र केवल एक धागा नहीं, बल्कि संबंधों में पवित्रता बनाए रखने, विचारों एवं कर्मों से शांति फैलाने और भाईचारे को मजबूत करने का आध्यात्मिक संदेश है।



नई दिल्ली

पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद को बीके पुष्पा दीदी, बीके विजय बहन, बीके शीतल बहन ने राखी बांधकर शांति, शक्ति, सुख एवं उत्तम स्वास्थ्य की मंगलकामनाएं दीं।



सम्बलपुर

ओडिशा के राजस्व एवं आपदा प्रबंधन मंत्री सुरेश पुजारी को राखी बांधते हुए सम्बलपुर उपक्षेत्र की संचालिका ब्रह्माकुमारी पार्वती दीदी। साथ में ब्रह्माकुमारी बनीत बहन भी उपस्थित रहीं।



कुरुक्षेत्र

ब्रह्माकुमारीज़ कुरुक्षेत्र सेवाकेंद्र की प्रभारी बीके सरोज दीदी ने स्वामी संगमनाथ महाराज को राखी बांधकर पवित्रता, सद्भाव एवं भाईचारे का संदेश दिया।



भीलवाड़ा

विजय सिंह पथिक नगर सेवाकेंद्र प्रभारी बीके इंद्रा दीदी, बीके रेखा दीदी हरिसेवाधाम उदासीन आश्रम के पीठाधीश्वर महामंडलेश्वर स्वामी हंसाराम उदासीन को रक्षासूत्र बांधते हुए।



इंदौर, मप्र

ओम शांति भवन से आर्म्ड पुलिस ट्रेनिंग सेंटर में बीके प्रमिला दीदी व अन्य बहनों ने पहुंचकर परमात्म रक्षासूत्र बांधकर सभी जवानों को नशामुक्ति का संकल्प कराया। इस दौरान ब्रह्माकुमार नारायण भाई ने भी अपने विचार व्यक्त किए।



पटना, बिहार

रक्षाबंधन के पावन अवसर पर बिहार सरकार के स्वास्थ्य मंत्री निशांत कुमार को ब्रह्माकुमारी पार्वती बहन, बीके सीता बहन रक्षा सूत्र बांधकर शुभकामनाएं दीं। साथ ही संस्थान द्वारा की जा रही सेवाओं के बारे में बताया।



मुजफ्फरपुर

बिहार सरकार की खेल मंत्री श्रेयासी सिंह को बीके सरिता बहन ने रक्षा सूत्र बांधकर शुभकामनाएं दीं। श्रेयासी सिंह अंतरराष्ट्रीय स्तर की निशानेबाज रही हैं और 2013 में मेक्सिको के अकापुल्को में आयोजित ट्रैप शूटिंग विश्व कप में भारतीय टीम का हिस्सा थीं।



मुजफ्फरपुर

बिहार सरकार के मद्य निषेध एवं उत्पाद मंत्री मदन सहनी ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पधारे, जहां उन्हें मुजफ्फरपुर सबजोन की निदेशिका राजयोगिनी बीके रानी दीदी ने परमात्म रक्षासूत्र बांधकर रक्षाबंधन की शुभकामनाएं दीं।



नोएडा

ज्ञान सरोवर की बीके बहन अदिति ने लाइव टाइम्स न्यूज चैनल के न्यूज डायरेक्टर दीपक चौरसिया को राखी बांधकर रक्षाबंधन का आध्यात्मिक संदेश देते हुए पवित्रता, सकारात्मकता और श्रेष्ठ जीवन की प्रेरणा दी।



आगरा

उत्तर प्रदेश सरकार की महिला कल्याण तथा बाल विकास विभाग कैबिनेट मंत्री बेबी रानी मौर्य को बीके मधु दीदी, बीके माला दीदी, बीके संगीता दीदी एवं बीके नीतू दीदी ने राखी बांधकर ईश्वरीय सौगात भेंट की।



वाराणसी

सारनाथ की ब्रह्माकुमारी बहनों ने मंडलायुक्त एस. राजलिंगम को राखी बांधकर आध्यात्मिक संदेश दिया। इस अवसर पर बीके राधिका बहन, बीके तपोशी बहन, बीके अनीता बहन, बीके विपिन भाई, बीके गंगाधर भाई, बीके संदीप भाई उपस्थित रहे।



दिल्ली

ब्रह्माकुमारी के लोधी रोड सेवाकेंद्र की प्रभारी बी.के. गिरिजा दीदी ने केपी महादेवस्वामी, सीएमडी, एनबीसीसी (इंडिया) लिमिटेड, भारत सरकार की नवरत्न कंपनी को रक्षासूत्र बांधकर रक्षाबंधन के पावन पर्व की शुभकामनाएं दीं।

शिव आमंत्रण, सदस्यता हेतु संपर्क करें-

वार्षिक मूल्य 210 रुपए तीन वर्ष 630 रुपए

मो 9414172596, 8521095678

Website www.shivamantran.com

पत्र व्यवहार का पता

प्रधान संपादक ब्र.कु. कोमल
ब्रह्माकुमारीज़, शिव आमंत्रण ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो 8740060231, 9179018078
Email shivamantran@bkivv.org

For online transfer

A/C Name: Rajyoga Education & Research Foundation
A/C Number: 35401958118, IFSC Code: SBIN0010638
Bank & Branch: State Bank Of India, PBKIVV, Shantivan, Abu Road, Rajasthan
Note: On transfer please email details to: shivamantran.acct@bkivv.org, Helpline: 9471854331

Scan To Pay

राज्यपाल ने किया नशामुक्त भारत संकल्प अभियान का राज्य स्तरीय शुभारंभ





मुंबई। एसएनडीटी कॉलेज में आयोजित समारोह में राज्यपाल जिष्णु देव वर्मा ने ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा चलाए जा रहे दस करोड़ नशामुक्त भारत संकल्प महाअभियान का राज्य स्तरीय शुभारंभ किया। इस दौरान सभी लोगों ने नशामुक्त समाज के निर्माण के लिए सामूहिक संकल्प लिया। राज्यपाल ने कहा कि ऐसे अभियानों से समाज को नई प्रेरणा और दिशा मिलेगी। संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका बीके संतोष दीदी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

2.75 लाख लोगों ने एक साथ नशामुक्त भारत का संकल्प लेकर बनाया रिकॉर्ड



अहिल्यानगर, महाराष्ट्र। श्री क्षेत्र धनगरवाड़ी में 23 अगस्त 2026 को संत योगीराज सद्गुरु गंगागिरी महाराज के 179वें अखंड हरिनाम सप्ताह में 275115 लोगों ने एक साथ नशामुक्त भारत का संकल्प लेकर रिकॉर्ड बनाया। सरला बेट के प्रमुख महंत रामगिरी महाराज के मार्गदर्शन में हुए इस आयोजन में ब्रह्माकुमारीज़ के सोनई एवं अहिल्यानगर सेवाकेंद्रों ने महत्वपूर्ण सहयोग दिया। रिकॉर्ड विनर्स बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में दर्ज किया गया।

इस अवसर पर डॉ. दीपक हरके ने महंत रामगिरी महाराज को प्रमाण-पत्र प्रदान किया। कार्यक्रम में मेडिकल विंग के सचिव बीके डॉ. बनारसी लाल, बीके राजेश्वरी दीदी, बीके सुप्रभा दीदी, बीके ऊषा दीदी, मधु महाराज एवं पूर्व मंत्री अन्नासाहेब म्हास्के पाटिल सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे। बता दें कि इससे पहले 2023 में 126613 लोगों के नशामुक्ति संकल्प का रिकॉर्ड बनाया था। नए रिकॉर्ड में 275115 लोगों की सहभागिता ने नशामुक्त भारत के संकल्प को व्यापक जनआंदोलन का संदेश दिया।

रांची में राज्यपाल ने किया अभियान का शुभारंभ



रांची, झारखंड। लोक भवन में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा संचालित 10 करोड़ नशामुक्ति प्रतिज्ञा महाअभियान के तहत नशामुक्ति जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। समाज को नशामुक्त बनाने और युवाओं को स्वस्थ एवं सकारात्मक जीवन के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से आयोजित कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लोगों ने सहभागिता की। उपस्थितजनों ने नशे से दूर रहने और दूसरों को भी नशामुक्त जीवन अपनाने के लिए प्रेरित करने का संकल्प लिया।



नशामुक्त युवा ही विकसित भारत की शक्ति

पानीपत में 10 करोड़ नशामुक्ति प्रतिज्ञा महाभियान का शुभारंभ



पानीपत, हरियाणा। ज्ञान मानसरोवर रिट्रीट सेंटर में नशामुक्त युवा- विकसित भारत संकल्प अभियान के अंतर्गत दस करोड़ नशामुक्ति प्रतिज्ञा महाभियान का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम में हरियाणा सरकार के कैबिनेट मंत्री कृष्णलाल पंवार ने कहा कि नशामुक्त समाज ही सशक्त हरियाणा और विकसित भारत का आधार है। ज्ञान मानसरोवर के निदेशक बीके भारत भूषण भाई ने कहा कि अध्यात्म एवं राजयोग मेडिटेशन से मन को सशक्त बनाकर नशे जैसी बुराइयों से सहज मुक्ति पाई जा सकती है। पानीपत सर्कल इंचार्ज राजयोगिनी सरला दीदी ने युवाओं की ऊर्जा को सकारात्मक दिशा देने को आवश्यक बताया। बीके सुनीता दीदी ने कहा कि आध्यात्मिक मूल्यों से जुड़ी युवा शक्ति राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य की आधारशिला है। एसडीएम इसराना नवदीप सिंह, तहसीलदार सहित प्रशासनिक अधिकारी, ब्रह्माकुमारीज़ के भाई-बहन एवं हजारों युवाओं ने सहभागिता की। सभी ने जीवन में नशा न करने की सामूहिक प्रतिज्ञा ली। बच्चों ने सांस्कृतिक प्रस्तुति दी। संचालन बीके सुनीता बहन ने किया।

नशामुक्त जीवन ही श्रेष्ठ जीवन का आधार

शिव आमंत्रण, छतरपुर, मप्र

ब्रह्माकुमारीज़ के नशामुक्ति अभियान के अंतर्गत नाग पंचमी महोत्सव पर चौरसिया समाज द्वारा चौरसिया सत्संग भवन में नशामुक्ति जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें ब्रह्माकुमारी रीना बहन ने कहा कि नशा व्यक्ति के स्वास्थ्य, मानसिक स्थिति, पारिवारिक संबंधों और सामाजिक जीवन को प्रभावित करता है। स्वस्थ, संस्कारवान एवं सशक्त समाज के लिए प्रत्येक व्यक्ति का नशे से दूर रहना आवश्यक है। ब्रह्माकुमारी कमला बहन ने उपस्थितजनों को नशामुक्त जीवन जीने की सामूहिक प्रतिज्ञा दिलाई। महिलाओं ने संकल्प लिया कि वे परिवार में नशे की आदत से जूझ रहे सदस्यों को प्रेमपूर्वक समझाकर नशा छोड़ने के लिए प्रेरित करेंगी। बच्चों को नशे के दुष्प्रभावों से बचाते हुए संस्कारवान वातावरण देने का संकल्प लिया। चौरसिया समाज के जिला अध्यक्ष बृजेश चौरसिया ने ब्रह्माकुमारी बहनों का सम्मान किया।







मन की शक्ति को बचाकर श्रेष्ठ संकल्पों में लगाना ही सच्चा पुरुषार्थ

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान

व्यर्थ समाप्त करने की पहली विधि है- अपने विचारों को देखना। जैसे कोई साक्षी बनकर अपने मन को देख रहा हो। कोई बात हुई और मन में विचार आया, तो तुरंत उसे पहचानें। स्वयं से पूछें- यह विचार मुझे शक्ति दे रहा है या मेरी शक्ति ले रहा है? यदि विचार शक्ति देने वाला नहीं है, तो उसे आगे बढ़ाने के बजाय वहीं विराम दे दें। विचारों को रोकने के लिए उनसे संघर्ष नहीं करना है, बल्कि उन्हें पहचानकर उनकी दिशा बदलनी है।

हर बात को अपने ऊपर लेकर भारी न होना। किसी ने कुछ कह दिया, किसी ने हमारी अपेक्षा के अनुसार कार्य नहीं किया या किसी परिस्थिति में परिवर्तन आ गया, तो उस दृश्य को बार-बार मन में दोहराने के बजाय उसे समाप्त करना सीखें। मन में यह संकल्प रखें- जो हुआ, वह एक दृश्य था। मैं आत्मा हूं, साक्षी हूं। मुझे अपनी शक्ति व्यर्थ नहीं करनी है। जब हम हर घटना को पकड़कर नहीं बैठते, तब मन स्वतः हल्का होने लगता है।

सदा समर्थ संकल्प ही करें

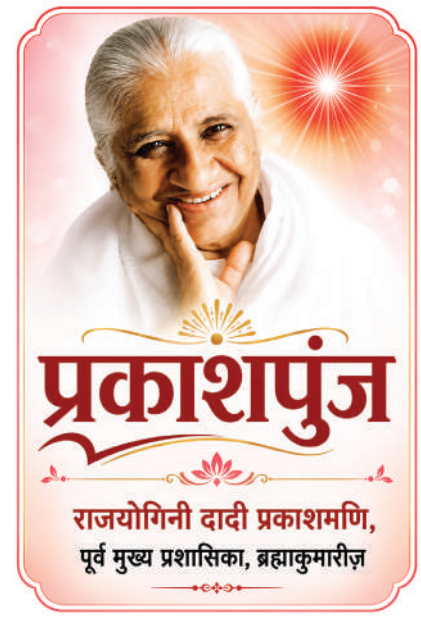
व्यर्थ को समाप्त करने के साथ मन को श्रेष्ठ संकल्पों से भरना भी आवश्यक है। मन को खाली छोड़ देंगे तो पुराने संस्कार फिर से विचारों को अपनी ओर खींच सकते हैं। इसलिए आत्मिक स्मृति का अभ्यास करें। जैसा संकल्प करेंगे, वैसी ही स्थिति बनने लगेगी। इसलिए हर व्यर्थ विचार के स्थान पर समर्थ संकल्प रखना राजयोगी का श्रेष्ठ पुरुषार्थ है। व्यर्थ को समाप्त करने का सबसे श्रेष्ठ साधन है- मन को परमात्मा की याद में लगाना। कर्म करते हुए भी बुद्धि का तार परमात्मा से जुड़ा रहे। बार-बार स्वयं को चेक करें- अभी मेरी बुद्धि कहां है? यदि बुद्धि किसी व्यक्ति, घटना या समस्या में फंस गई है, तो उसे धीरे से बाबा की ओर मोड़ दें।

अमृतवेले से दिन की दिशा तय करें

दिन की शुरुआत जैसी होगी, वैसी ही दिनभर की स्थिति पर प्रभाव पड़ेगा। अमृतवेले में कुछ समय शांत होकर आत्म-अनुभूति और परमात्म-स्मृति में बिताएं। उस समय मन में संकल्प रखें- आज मुझे व्यर्थ में नहीं जाना है। मुझे हर आत्मा के प्रति शुभभावना रखनी है और अपनी शक्ति श्रेष्ठ कार्य में लगानी है। दिन में समय-समय पर एक मिनट का ट्रैफिक कंट्रोल भी मन को पुनः केंद्रित करने का सुंदर अभ्यास है। इससे बुद्धि को बाहरी हलचल से हटाकर आत्मिक स्थिति में लाने का अभ्यास होता है। कई बार व्यर्थ विचारों का कारण किसी व्यक्ति के प्रति शिकायत या नाराजगी होती है। ऐसे समय में व्यक्ति की कमजोरी को देखने के बजाय उसकी विशेषता को देखने का अभ्यास करें। मन में उसके प्रति शुभभावना रखें। इससे मन का बोझ कम होगा और व्यर्थ चिंतन की श्रृंखला टूटेगी। राजयोगी का कार्य किसी की कमी को मन में लेकर बैठना नहीं, बल्कि अपनी स्थिति को शक्तिशाली बनाना है। दूसरों के संस्कारों को बदलने से पहले अपने मन की स्थिति को संभालना ही सच्ची विजय है। व्यर्थ समाप्त करना एक दिन का कार्य नहीं, बल्कि निरंतर अभ्यास है। इसके लिए मन को दबाना नहीं, बल्कि उसकी दिशा बदलनी है। साक्षीभाव, आत्मचेतना, शुभभावना, परमात्म-स्मृति और श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास करते-करते मन की शक्ति संचित होने लगती है। हमारा एक भी संकल्प व्यर्थ न जाए। हर संकल्प में आत्मिक शक्ति हो, हर बोल में मधुरता हो और हर कर्म में परमात्म-स्मृति हो। जब मन व्यर्थ से मुक्त होता है, तब बुद्धि स्पष्ट होती है, समय की बचत होती है और आत्मा का अनुभव गहरा होता है। यही मन की स्वच्छता है, यही सच्चा पुरुषार्थ है और यही राजयोगी जीवन की सुंदर पहचान है।

परमात्म-स्मृति से संस्कार परिवर्तन का पुरुषार्थ

राजयोगी जीवन का अर्थ केवल ज्ञान सुनना नहीं, बल्कि ज्ञान को जीवन में धारण करके अपनी कमजोरियों और पुराने संस्कारों पर विजय प्राप्त करना है। आत्मा मूल रूप से पवित्र और शक्तिशाली है। कमजोरियां आत्मा का मूल स्वरूप नहीं, बल्कि समय के साथ बने हुए संस्कार हैं। इसलिए उन्हें बदला जा सकता है। कमजोरी को समाप्त करने के लिए सबसे पहले उसे पहचानना आवश्यक है। क्रोध, अहंकार, लोभ, मोह, ईर्ष्या, आलस्य, असहनशीलता, आलोचना करना या व्यर्थ चिंतन- इनमें से कौन-सा संस्कार बार-बार हमारी स्थिति को प्रभावित करता है, इसे ईमानदारी से देखना होगा। स्वयं को दोषी ठहराने के बजाय स्वयं को चेक करें। कमजोरी दिखाई दे तो निराश नहीं होना है। यह समझना है कि यह मेरा मूल संस्कार नहीं है। मैं आत्मा हूं और मेरे अंदर परिवर्तन की शक्ति है।



कमजोरी को शक्ति में बदलें

राजयोग का अर्थ केवल कमजोरी को दबाना नहीं, बल्कि उसके स्थान पर श्रेष्ठ गुण को जागृत करना है। यदि क्रोध आता है तो शांति का अभ्यास करें। यदि किसी के प्रति ईर्ष्या उत्पन्न होती है तो उसके प्रति शुभभावना रखें। यदि अहंकार आता है तो विनम्रता और स्वमान को स्मृति में लाएं।

जिस गुण का हम चिंतन करेंगे, वही धीरे-धीरे हमारी स्थिति का हिस्सा बनने लगेगा। स्वयं के बल से संस्कार परिवर्तन कठिन लग सकता है, लेकिन परमात्मा की याद से आत्मा को अतिरिक्त शक्ति मिलती है। जब कोई कमजोरी सामने आए, तब उससे लड़ने के बजाय बाबा को याद करें। अनुभव करें - परमात्मा मेरे साथ हैं, उनकी शक्ति मेरे अंदर भर रही है। यह स्मृति आत्मा में साहस और दृढ़ता पैदा करती है।

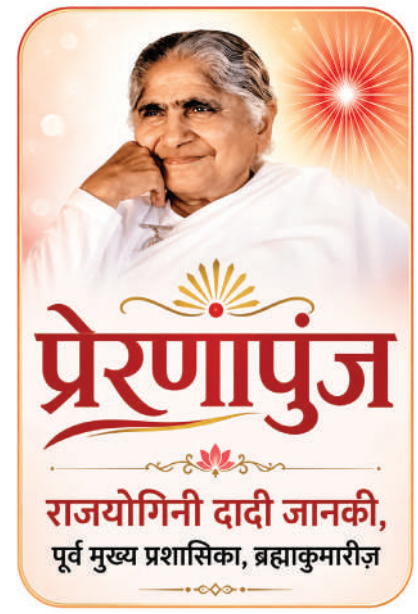
संग और वातावरण का प्रभाव

कमजोरियों को समाप्त करने के लिए संग का भी विशेष महत्व है। जैसा संग, वैसा रंग। यदि हम नकारात्मक चर्चा, आलोचना और व्यर्थ बातों में अधिक समय बिताएंगे तो मन पर उसका प्रभाव पड़ेगा। इसलिए श्रेष्ठ संग, सकारात्मक वातावरण और ईश्वरीय ज्ञान को जीवन का आधार बनाएं। दूसरों की कमजोरियां देखने के बजाय उनकी विशेषताओं को देखने का अभ्यास करें। इससे मन भी सकारात्मक बनेगा और अपनी कमजोरियों पर विजय पाने की शक्ति भी बढ़ेगी। राजयोगी जीवन में कभी गलती हो जाना असफलता नहीं है। गलती के बाद उसे दोहराना ही वास्तविक कमजोरी है। यदि कोई संस्कार सामने आ गया तो स्वयं से पूछें- यह क्यों हुआ और अगली बार मुझे क्या करना है? बीती हुई गलती को मन में लेकर बैठना नहीं है। उससे शिक्षा लेकर आगे बढ़ना है। स्वयं को अपराधबोध में नहीं, पुरुषार्थ में लगाना है। दिन समाप्त होने से पहले कुछ मिनट स्वयं को चेक करें। आज मेरे मन में कौन-से व्यर्थ विचार आए? कहां क्रोध आया? किस परिस्थिति में मैं अस्थिर हुआ? कहां मैंने आत्मिक शक्ति का प्रयोग किया? फिर अगले दिन के लिए एक छोटा-सा संकल्प निर्धारित करें। निरंतर स्वचेकिंग से संस्कारों की पहचान स्पष्ट होती जाएगी और धीरे-धीरे परिवर्तन आने लगेगा। कमजोरियों का त्याग अचानक नहीं होता। यह निरंतर जागृति, अभ्यास और परमात्म-स्मृति का परिणाम है।

मौन से जागृत होती है मन की ऊर्जा

शरीर शांत बैठा हो, फिर भी मन में अनेक बातें चलती रहती हैं- किसने क्या कहा, मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ, आगे क्या होगा, उसने ऐसा क्यों किया? यह आंतरिक शोर हमारी शक्ति को धीरे-धीरे समाप्त करता है। इसलिए राजयोगी के लिए बाहरी मौन से अधिक जरूरी है मन का मौन। साइलेंस का अर्थ केवल चुप रहना नहीं है। वास्तविक साइलेंस वह स्थिति है जिसमें मन शांत हो, बुद्धि स्पष्ट हो और आत्मा अपने मूल स्वरूप में स्थित हो। जब मन व्यर्थ से मुक्त होता है, तब अंदर एक ऐसी शांति का अनुभव होता है, जिसमें निर्णय लेने की शक्ति और परिस्थितियों को समझने की क्षमता बढ़ जाती है। हम जितना कम व्यर्थ बोलेंगे और जितना कम व्यर्थ सोचेंगे, उतनी ही हमारी आंतरिक शक्ति बढ़ेगी।

जिस प्रकार सड़क पर ट्रैफिक अधिक होने से गति धीमी हो जाती है, उसी प्रकार मन में विचारों का ट्रैफिक बढ़ने से आत्मिक शक्ति की गति कम हो जाती है। दिनभर में बीच-बीच में आत्मचिंतन में स्थित करें। एक मिनट के लिए रुकें और अनुभव करें मैं आत्मा हूं... शांत स्वरूप हूं... मैं परमात्मा की संतान हूं। धीरे-धीरे मन की गति शांत होने लगेगी।



साइलेंस में परमात्मा का अनुभव

साइलेंस में बैठकर स्वयं को ज्योति-बिंदु आत्मा समझें और परमात्मा को याद करें। मन में अनुभव करें कि परमात्मा की शांति और शक्ति की किरणें आत्मा को भर रही हैं। यह केवल कुछ मिनटों का ध्यान नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक अवस्था बन सकती है। साइलेंस का अर्थ यह भी है कि हमारे बोलों में संयम हो। हर बात का जवाब देना आवश्यक नहीं है। हर चर्चा में अपनी बात सिद्ध करना आवश्यक नहीं है। कभी-कभी मौन रहना ही सबसे शक्तिशाली उत्तर होता है। बोल कम हों, लेकिन बोलों में शक्ति हो। जब बोल आवश्यक, मधुर और शुभ हों, तब वातावरण भी सकारात्मक बनता है। जब हम प्रतिदिन कुछ समय आंतरिक मौन का अभ्यास करते हैं, तो मन की एकाग्रता बढ़ती है, व्यर्थ संकल्प कम होते हैं और आत्मविश्वास मजबूत होता है। धीरे-धीरे ऐसी स्थिति बनने लगती है जिसमें बाहरी हलचल के बीच भी अंदर शांति बनी रहती है। राजयोगी की पहचान यही है कि बाहर कर्म में व्यस्त होते हुए भी अंदर साइलेंस में रहे।

परमात्म-स्मृति से चिंतामुक्त और निश्चिंत होगा जीवन

आज मनुष्य काम से अधिक काम की चिंता करता है। एक कार्य पूरा होने से पहले दूसरे कार्य की चिंता शुरू हो जाती है। भविष्य में क्या होगा, परिवार का क्या होगा, सेवा कैसी चलेगी, लोग क्या कहेंगे- इन विचारों में मन अपनी शक्ति गंवा देता है। राजयोगी को इस मानसिक बोझ से मुक्त होकर कर्म करना सीखना है। जिम्मेदारी हमें कर्म करने की प्रेरणा देती है, जबकि फिक्र हमारी शक्ति को कम करती है। जिम्मेदारी में समाधान होता है, फिक्र में केवल विचारों की पुनरावृत्ति। यदि कोई समस्या सामने है तो शांत मन से देखें कि मैं इसके लिए क्या कर सकता हूं। जो करना है, श्रेष्ठ रीति से करें और फिर उसे परमात्मा को अर्पित कर दें। बार-बार उसी बात के बारे में सोचते रहना समस्या का समाधान नहीं है। राजयोगी को कर्म में तत्पर और मन से हल्का रहना है। फिक्र से फारिग होने का सबसे बड़ा आधार है- परमात्मा को अपना साथी अनुभव करना। जब आत्मा को यह विश्वास होता है कि परमात्मा मेरे साथ हैं, तब अकेलेपन और असुरक्षा की भावना कम होने लगती है।



मेरे साथ परमात्मा की शक्ति है-

हर परिस्थिति में मन में यह संकल्प रखें- मैं अकेला नहीं हूं। मेरे साथ परमात्मा की शक्ति है। यह स्मृति मन को सहारा देती है और बुद्धि को सही निर्णय लेने की शक्ति प्रदान करती है। हमारा अधिकार कर्म पर है, परिणाम पर नहीं। अपना श्रेष्ठ पुरुषार्थ करना हमारे हाथ में है, लेकिन परिणाम अनेक परिस्थितियों पर निर्भर करता है। इसलिए कर्म करते हुए परिणाम की चिंता करना व्यर्थ है। हमारा संकल्प हो मैं अपना श्रेष्ठ दूंगा, बाकी परमात्मा की जिम्मेदारी। इससे मन में हल्कापन आता है और कर्म में भी श्रेष्ठता आती है। फिक्र का बड़ा कारण भविष्य है। अभी जो हुआ भी नहीं, उसके बारे में मन अनेक कल्पनाएं करने लगता है। इससे वर्तमान की शक्ति समाप्त होती है। हमें वर्तमान में स्थित रहकर हर कदम पर श्रेष्ठ कर्म करना चाहिए। भविष्य अपने समय पर सामने आएगा। आज की स्थिति को शक्तिशाली बनाना ही भविष्य को श्रेष्ठ बनाने का सही तरीका है।

विश्व बंधुत्व की भावना के साथ मनाई दादी प्रकाशमणि की 19वीं पुण्यतिथि



शिव आमंत्रण, आबूरोड

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की 19वीं पुण्यतिथि 25 अगस्त को विश्व बंधुत्व दिवस के रूप में मनाई गई। शांतिवन स्थित उनके समाधि स्थल 'प्रकाश स्तंभ' पर संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मुन्नी दीदी, महासचिव बीके करुणा भाई, अतिरिक्त महासचिव बीके मृत्युंजय भाई सहित वरिष्ठ पदाधिकारियों ने पुष्प अर्पित कर भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी।

राजयोगिनी बीके मुन्नी दीदी ने कहा कि दादी प्रकाशमणि जी महान आध्यात्मिक व्यक्तित्व थीं। उनके लिए संसार का प्रत्येक व्यक्ति समान था। उनके हर संकल्प में मानव कल्याण की भावना समाई रहती थी। जो भी उनके संपर्क में आता, वह सहज ही उनका अपना बन जाता था। उनका पूरा जीवन मानवता की सेवा के लिए समर्पित रहा। महासचिव बीके करुणा भाई ने कहा कि दादी के बोल और विचारों में सदैव लोक कल्याण की भावना दिखाई देती थी। छोटे-बड़े सभी उनके स्नेह से प्रभावित थे। वे वास्तव में पूरे विश्व की दादी थीं और जीवनभर मानवता के कल्याण के लिए कार्य करती रहीं। अतिरिक्त महासचिव डॉ. बीके मृत्युंजय भाई ने कहा कि दादी प्रकाशमणि ने गहन साधना के माध्यम से उच्च आध्यात्मिक स्थिति प्राप्त की थी। वे नारी शक्ति की सशक्त मिसाल थीं। मानव सेवा के लिए वे दिन-रात सदैव तत्पर रहती थीं।

कार्यक्रम में संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके शशि दीदी, ग्लोबल अस्पताल के निदेशक डॉ. प्रताप मिड्ढा, ज्ञानामृत के प्रधान संपादक बीके आत्म प्रकाश भाई, बीके मोहन सिंघल भाई, डॉ. सतीश गुप्ता, बीके प्रकाश भाई, आवास-निवास के प्रभारी बीके देव भाई सहित अनेक लोगों ने दादी के प्रति अपनी भावनाएं व्यक्त कीं।

हजारों श्रमिकों ने ली नशामुक्ति की प्रतिज्ञा

विश्व बंधुत्व और स्वच्छ जीवन का दिया संदेश



शिव आमंत्रण, आबूरोड

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी की 19वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में शांतिवन स्थित विशाल डायमंड हॉल में श्रमिकों के लिए विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में हजारों श्रमिकों ने नशामुक्त जीवन जीने और आध्यात्मिक मूल्यों को अपनाने का संकल्प लिया।

शांतिवन की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके नीलू बहन ने कहा कि नशा आत्मा और शरीर दोनों को नुकसान पहुंचाता है तथा पूरे परिवार के जीवन को प्रभावित करता है। इसलिए किसी भी प्रकार के नशे को जीवन में स्थान नहीं देना चाहिए। वरिष्ठ राजयोगी बीके सुधीर ने कहा कि दादी प्रकाशमणि जी सदैव दूसरों के कल्याण के लिए कार्य करती थीं और श्रमिकों के प्रति उनका विशेष स्नेह था। उनकी पुण्यतिथि पर सभी को संकल्प लेना चाहिए कि वे नशे से दूर रहेंगे तथा प्रतिदिन आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग का अभ्यास करेंगे। कार्यक्रम में बीके अमरदीप, बीके तारा सहित अन्य वक्ताओं ने भी श्रमिकों को तन और मन की स्वच्छता बनाए रखने तथा जीवन में श्रेष्ठ संस्कार अपनाने के लिए प्रेरित किया। इसके बाद श्रमिकों ने ब्रह्माभोजन स्वीकार किया।

अपने लेखन से समाज को नई दिशा और राह दिखाएं : महासचिव राजयोगी करुणा भाई

- जिला स्तरीय पत्रकार स्नेह मिलन एवं पुष्पांजली सभा आयोजित
- दादी प्रकाशमणि जी की 19वीं पुण्य स्मृति दिवस के उपलक्ष्य में आयोजन

शिव आमंत्रण, आबूरोड





ब्रह्माकुमारीज संस्थान के मुख्यालय शांतिवन में रविवार को जिला स्तरीय पत्रकार स्नेह मिलन एवं श्रद्धांजली सभा का आयोजन किया गया। इसमें जिलेभर से आए पत्रकारों ने एक स्वर में नशामुक्त जीवन अपनाने का संकल्प लिया। साथ ही दादी प्रकाशमणि की स्मृति में बने प्रकाश स्तंभ पर पहुंचकर पुष्पांजली अर्पित की। बता दें कि हर वर्ष ब्रह्माकुमारीज की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की पुण्य स्मृति दिवस के उपलक्ष्य में पत्रकार स्नेह मिलन का आयोजन किया जाता है।

संस्थान के महासचिव राजयोगी बीके करुणा भाई ने कहा कि आप सभी लेखन से समाज को नई दिशा देते हैं। आपका लिखा एक-एक शब्द लोगों में नई चेतना का संचार करता है और राह दिखाता है। आप अपने समाचारों में ज्यादा से ज्यादा सकारात्मक, मोटिवेशनल, समाज को सही दिशा देने वाली खबरों का समावेश करें, ताकि समाज को नई दिशा मिल सके और मूल्यों का संचार हो। वर्तमान परिस्थितियों में समाजा में सकारात्मकता का माहौल बनाए रखना बहुत जरूरी है। अतिरिक्त महासचिव राजयोगी डॉ. बीके मृत्युंजय भाई ने कहा कि आप सभी परमात्मा के विशेष आत्माएं और बच्चे हो। आपके कंधों पर बड़ी जिम्मेदारी है। आपका लिखा एक-एक शब्द इतिहास बनाता है। इसलिए ऐसा लेखन करें जो स्वयं को भी संतुष्टी, खुशी दे और दूसरों को भी खुशी मिले। लोगों तक परमात्मा का संदेश पहुंचाने में आप सभी की बड़ी भूमिका है।

कुछ समय परमात्मा का ध्यान करें

गीता ज्ञान विशेषज्ञ राजयोगिनी बीके ऊषा दीदी ने कहा कि आप सभी अपनी व्यस्त दिनचर्या में से समय निकाल रोज कुछ समय के लिए परमात्मा का ध्यान जरूर करें। परमात्मा की याद से मन शांत होगा, जीवन में खुशी आएगी और आपका लेखन प्रभावी होगा। वरिष्ठ राजयोगी बीके प्रकाश भाई ने कहा कि दादीजी के मन में सदा विश्व कल्याण, विश्व बंधुत्व का भाव रहता था।

ये भी रहे मौजूद

स्वागत भाषण वरिष्ठ पत्रकार राजयोगी बीके अवतार भाई ने दिया। शिव आमंत्रण के प्रधान संपादक बीके कोमल भाई ने आभार माना। संचालन बीके शिवांगी बहन ने किया। अतिथियों का स्वागत बीके दलजीत भाई, शिव आमंत्रण के संपादक बीके पुष्पेंद्र भाई, बीके गजानन भाई, बीके प्रेम भाई, बीके मोहित भाई, बीके त्रिलोचन भाई ने किया।

राजयोग जीवन जीने की सर्वश्रेष्ठ कला : चंद्रिका दीदी

सम्मेलन में नगरीय विकास एवं आवास मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने लिया भाग

शिव आमंत्रण, इंदौर, मप्र



ब्रह्माकुमारीज के न्यू पलासिया स्थित जोनल मुख्यालय ज्ञान शिखर ओम शांति भवन में कलाकार सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इसमें कला एवं संस्कृति प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्षा राजयोगिनी चंद्रिका दीदी ने कहा कि वर्तमान समय में प्रेम, शांति और सद्भावना की कमी के कारण मनभेद एवं मतभेद बढ़ रहे हैं, जिससे पारिवारिक संबंधों में तनाव और मनमुटाव बढ़ता जा रहा है। उन्होंने कहा कि राजयोग जीवन जीने की सर्वश्रेष्ठ कला है। राजयोग के माध्यम से श्रेष्ठ विचारों एवं दिव्य संस्कारों को धारण कर स्वर्णिम भारत का निर्माण किया जा सकता है।

नगरीय विकास एवं आवास मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने कहा कि कला भी साधना है, जिससे ईश्वर की अनुभूति होती है। इंदौर जोन की क्षेत्रीय निदेशिका बीके हेमलता दीदी ने कहा कि भारतीय संस्कृति की भावना 'वसुधैव कुटुंबकम' और 'सर्वे भवंतु सुखिनः' रही है। प्रभाग के मुख्यालय संयोजक व गायक ब्रह्माकुमार सतीश भाई ने कहा कि कला वही है जो सबका भला करे और सभी को साथ लेकर चलना सिखाए।

क्षेत्रीय संयोजिका बीके करुणा दीदी ने योग की गहन अनुभूति कराई। सांसद शंकर लालवानी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में 60 राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर के कलाकारों को दुपट्टा, स्मृति चिह्न एवं ईश्वरीय प्रसाद देकर सम्मानित किया गया।

इनमें संतोष जोशी, मृणाल व्यास, सुशील जौहरी, हरे राम बाजपेई, रागिनी मक्खर, बीके सतीश भाई, बीके भानु भाई एवं बीके नितिन भाई शामिल रहे। लगभग 350 कलाकारों की उपस्थिति में शक्ति निकेतन की कुमारियों की सांस्कृतिक प्रस्तुतियां आकर्षण का केंद्र रहीं। जिन्होंने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।



वर्ल्ड ट्रेड सेंटर में कला और आत्मबोध का संगम

मुंबई । वर्ल्ड ट्रेड सेंटर मुंबई में कला, साहित्य, सृजनात्मकता और जागरूक जीवनशैली का अनूठा संगम देखने को मिला। यहां राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी डॉ. नलिनी दीदी की रेखाचित्र प्रदर्शनी आरंभः जीवन में नई शुरुआत कभी देर नहीं आयोजित की गई।

इसके पश्चात राजयोगी ब्रह्माकुमार निकुंज की पुस्तक आत्मा की प्रतिध्वनियां- जागरूक जीवन के लिए चिंतन का विमोचन किया गया। प्रदर्शनी में दीदीजी द्वारा 80 वर्ष की आयु में बनाए गए श्रीकृष्ण के जीवन पर आधारित रेखाचित्र प्रदर्शित किए गए। चित्रों ने यह संदेश दिया कि सीखने और सृजन की कोई उम्र नहीं होती। पुस्तक आधुनिक जीवन की भागदौड़ के बीच आत्मचिंतन, जागरूकता और उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा देती है।

कार्यक्रम में वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के अध्यक्ष डॉ. विजय कलंत्री, बेलारूस के महावाणिज्य दूत अलेक्जांडर मात्सुको, श्रीलंका की महावाणिज्य दूत शिरानी अरियारथने, निदेशक प्रिया पांसरे तथा बीके शकु दीदी सहित अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे। इससे पूर्व पुस्तक केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी एवं प्रसिद्ध लेखक अमीश त्रिपाठी को भी भेंट की गई। दोनों ने पुस्तक को वर्तमान समय के लिए प्रेरणादायी और प्रासंगिक बताया।

बचपन से ही बच्चों को शांति, योग और सकारात्मक चिंतन का महत्व समझाना जरूरी



▪ ओआरसी में राष्ट्रीय शिक्षाविद सम्मेलन आयोजित

शिव आमंत्रण, गुरुग्राम

ब्रह्माकुमारीज संस्थान के भोरा कलां स्थित ओम शांति रिट्रीट सेंटर में शिक्षक दिवस पर दो दिवसीय राष्ट्रीय शिक्षाविद सम्मेलन का आयोजित किया गया। 'द पावर ऑफ नाउ' विषय पर आयोजित सम्मेलन में देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपति, प्रोफेसर, महाविद्यालयों एवं विद्यालयों के प्राचार्य तथा शिक्षाविद शामिल हुए। सम्मेलन में वर्तमान शिक्षा प्रणाली में आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों तथा आधुनिक तकनीक के संतुलित समावेश पर विचार-विमर्श किया गया।

इसमें ओआरसी की निदेशिका राजयोगिनी आशा दीदी ने कहा कि वर्तमान समय परिवर्तन का सबसे शक्तिशाली क्षण है। विद्यार्थियों को बाल्यावस्था से ही शांति, योग और सकारात्मक चिंतन का महत्व समझाना आवश्यक है। संस्कार आधारित शिक्षा से ही मानसिक रूप से स्वस्थ और सुसंस्कृत समाज का निर्माण संभव है।

हैदराबाद विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. बीजे राव ने कहा कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था मुख्य रूप से भौतिक समृद्धि पर केंद्रित है, जबकि शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति का आंतरिक एवं आध्यात्मिक विकास भी होना चाहिए। शिक्षा कक्षा की चारदीवारी तक सीमित नहीं, बल्कि जीवन के प्रत्येक अनुभव से प्राप्त होती है। एमडीआई गुरुग्राम के निदेशक प्रो. अरविंद सहाय ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बढ़ते प्रभाव पर कहा कि इसके अत्यधिक उपयोग से विद्यार्थियों के मस्तिष्क के स्वाभाविक विकास पर असर पड़ सकता है। सीखने की प्रक्रिया को प्रभावी बनाए रखने के लिए मानसिक व्यायाम जरूरी है।

आईआईएलएम विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा के स्कूल ऑफ कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग के निदेशक डॉ. ए. वडिवेल ने कहा कि शिक्षकों की शांत एवं सकारात्मक मनःस्थिति विद्यार्थियों में विश्वास और समानुभूति विकसित कर सकती है। जीडी गोयनका विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. राज सिंह ने कहा कि शिक्षक केवल किताबी ज्ञान नहीं देता, बल्कि अपने व्यक्तित्व एवं जीवनशैली से विद्यार्थियों को प्रेरित करता है। एमिटी विश्वविद्यालय के निदेशक संजय झा ने कहा कि मूल्य केवल पढ़ाए नहीं जाते, बल्कि जीवन में उतारे जाते हैं। इग्नू के सहायक क्षेत्रीय निदेशक प्रो. कमलेश मीणा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। सिरसा की बीके बिंदु दीदी ने राजयोग ध्यान की अनुभूति कराई। माउंट आबू से आईं प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका बीके सुमन ने भी संबोधित किया।

विज्ञान और अध्यात्म के संतुलन से ही संभव है नव-निर्माण



▪ ओआरसी में 'डिस्कवर, डिजाइन एंड ट्रांसफॉर्म' सम्मेलन का आगाज

शिव आमंत्रण, गुरुग्राम

भोरा कलां स्थित ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के ओम शांति रिट्रीट सेंटर में साइंटिस्ट्स, इंजीनियर्स एवं आर्किटेक्ट्स का दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया। डिस्कवर, डिजाइन एंड ट्रांसफॉर्म विषय पर आयोजित इस सम्मेलन में देशभर से आए प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों, तकनीकी विशेषज्ञों और वास्तुकारों ने भाग लिया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य आधुनिक विज्ञान और आध्यात्मिक मूल्यों के मेल से समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाना है।

इसमें ओआरसी की निदेशिका राजयोगिनी बीके आशा दीदी ने कहा कि आध्यात्मिकता जीवन में विनम्रता और शांति का संचार करती है। विज्ञान के बड़े से बड़े आविष्कार भी मौन यानी साइलेंस की गहराइयों से जन्म लेते हैं। साइंस और साइलेंस एक-दूसरे के पूरक हैं। जब हमारे विचार श्रेष्ठ और सकारात्मक होंगे, तभी एक सुंदर और नई दुनिया का निर्माण संभव हो सकेगा। राजयोग का निरंतर अभ्यास मन और बुद्धि पर नियंत्रण सिखाता है। जब मन शुद्ध होता है, तो उससे जनहितकारी और नए आविष्कार जन्म लेते हैं।

स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर (एसपीए) के निदेशक प्रो. वीके पॉल ने कहा कि अकादमिक या वैचारिक चर्चाओं का वास्तविक महत्व तभी है जब वे धरातल पर कर्म के रूप में दिखाई दें। जिम्मेदारियों को ठोस परिणाम में बदलना ही आध्यात्मिकता का असली मकसद है। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) के पूर्व महानिदेशक हरि बाबू श्रीवास्तव ने अहंकार को प्रगति की राह में सबसे बड़ी बाधा बताया। उन्होंने कहा कि सही दिशा में कर्म करने की प्रेरणा केवल सच्चे ज्ञान से मिलती है।

साइंटिस्ट्स, इंजीनियर्स एवं आर्किटेक्ट्स प्रभाग के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजयोगी बीके मोहन सिंघल ने कहा कि राजयोग के नियमित अभ्यास से न केवल जीवन संवरता है, बल्कि यह व्यक्ति को अपनी जिम्मेदारियों को अधिक कुशलता से निभाने और बेहतर प्रबंधन (मैनेजमेंट) की कला भी सिखाता है।

प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक राजयोगी बीके भारत भूषण ने कहा कि आध्यात्मिक शक्ति ही मनुष्य को विपरीत परिस्थितियों और आपदाओं के बीच अवसर तलाशने का धैर्य देती है। कार्यक्रम के दौरान दिल्ली में प्रभाग के क्षेत्रीय संयोजक बीके पीयूष ने प्रभाग द्वारा जनहित में चलाई जा रही विभिन्न सेवाओं की रूपरेखा प्रस्तुत की। दिल्ली, लोधी रोड, सेवाकेंद्र प्रभारी बीके गिरिजा दीदी ने सभी को को राजयोग के अभ्यास द्वारा शांति की गहन अनुभूति कराई।

सम्मेलन में मुख्य रूप से ग्लोबल क्वांटम फोरम के प्रसिद्ध वैज्ञानिक अनुपम प्रकाश, सी-डैक की सहयोगी निदेशक प्रो. प्रियंका जैन, एनआइटीटीआर चंडीगढ़ के निदेशक प्रो. भोलाराम गुर्जर, आइओसी की मुख्य महाप्रबंधक अंजली भावे, केंद्रीय लोक निर्माण विभाग (सीपीडब्लूडी), चंडीगढ़ क्षेत्र के अपर महानिदेशक कमल कुमार एवं आइओसी के कार्यकारी निदेशक सर्वेश कुमार शामिल रहे। बीके अंजलि ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। मंचासीन अतिथियों का स्वागत पटके एवं पौधे भेंट कर किया गया। मंच का कुशल संचालन बीके विधात्री द्वारा ने किया। सम्मेलन के दूसरे दिन विभिन्न तकनीकी सत्रों में विज्ञान और आध्यात्म के अंतर-संबंधों पर गहन चर्चा जारी रहेगी।



सुरक्षा सलाहकार से मुलाकात

नई दिल्ली। ब्रह्माकुमारीज़ गुरुग्राम स्थित ओआरसी की निदेशिका बीके आशा दीदी, बीके शुक्ला दीदी, बीके फ़लक दीदी एवं बीके सारिका दीदी ने भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल से मुलाकात कर अध्यात्म योग पर चर्चा की। ब्रह्माकुमारी बहनों ने उन्हें राष्ट्र के प्रति समर्पण, साहस एवं सेवाभाव के लिए सम्मान व्यक्त करते हुए उनके निरंतर योगदान की शुभकामनाएं दीं।



गौरव पुरस्कार से सम्मानित

नई दिल्ली। नई दिल्ली स्थित एनडीएमसी कन्वेंशन सेंटर में आयोजित राष्ट्रीय गौरव पुरस्कार 2026 समारोह में महाराष्ट्र के सातारा की समाजसेविका, राजयोग शिक्षिका ब्रह्माकुमारी डॉ. सुवर्णा दीदी को महिला सशक्तिकरण, सामाजिक सेवा एवं मानवीय मूल्यों के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए राष्ट्रीय गौरव पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



स्कूल में थॉट लैब शुरू

हवेली खड़गपुर, बिहार। क्यूमैक्स पब्लिक स्कूल में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा थॉट लैब का उद्घाटन किया गया। सेवाकेंद्र संचालिका बीके स्नेहा बहन, बीके लाडली बहन, बीके डॉ. फनीश चंद्र एवं स्कूल के सचिव प्रणव कुमार ने संयुक्त रूप से फीता काटकर उद्घाटन किया। बीके डॉ. फनीश चंद्र ने कहा कि विद्यार्थियों को ध्यान और सकारात्मक चिंतन अपनाना चाहिए।



उठो जगत के वास्ते...

करेली, नरसिंहपुर, मप्र। युवा प्रभाग द्वारा चलाए जा रहे प्रोजेक्ट उठो जगत के वास्ते के तहत ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें माउंट आबू से पधारी डॉ. सुनीता दीदी ने कहा कि परिस्थितियां कैसी भी हों, सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखना आवश्यक है। इस दौरान जिला प्रभारी बीके कुसुम दीदी व अन्य वक्ताओं ने भी विचार व्यक्त किए।



बीके गीता दीदी सम्मानित

भीनमाल, राज.। ब्रह्माकुमारीज़ की संचालिका बीके गीता दीदी को स्वतंत्रता दिवस पर शिवराज स्टेडियम में आयोजित समारोह में समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्यों के लिए एडीएम डॉ. पूजा, उपखंड अधिकारी मोहित कासनियां, एसपी ने उपखंड स्तरीय सम्मान से सम्मानित किया।

इंदौर से बिलासपुर तक प्रशासक सेवा प्रभाग एवं समाज सेवा प्रभाग के जन-जागरूकता अभियान का शुभारंभ





शिव आमंत्रण, इंदौर। ब्रह्माकुमारीज़ के प्रशासक सेवा प्रभाग एवं समाज सेवा प्रभाग द्वारा 6 से 18 सितंबर 2026 तक इंदौर से बिलासपुर तक विशेष जन-जागरूकता अभियान चलाया गया गया। जोनल निदेशिका राजयोगिनी बीके आरती दीदी के मार्गदर्शन में चल रहे इस अभियान का उद्देश्य प्रशासनिक अधिकारियों एवं समाज के विभिन्न वर्गों में सकारात्मक सोच, नैतिक मूल्यों, तनावमुक्त जीवन तथा जनसेवा की भावना को बढ़ावा देना है। अभियान का शुभारंभ ओम शांति भवन से न्यायमूर्ति बीडी राठी, विस के सचिव अवधेश प्रताप सिंह, प्रशासक विंग के मुख्यालय संयोजक बीके हरीश भाई, पीथमपुर की निदेशिका बीके सुनीता दीदी, वरिष्ठ राजयोगी सुरेश भाई, अभियान के संयोजक वरिष्ठ राजयोगी बीके राकेश भाई ने दीप प्रज्वलित कर किया।

प्रशासक सेवा अभियान...



शिव आमंत्रण, सागर। ब्रह्माकुमारीज़ के न्यू प्रभाकर नगर, मकरोनिया सेवाकेंद्र में संस्थान के प्रशासनिक सेवा प्रभाग एवं समाज सेवा प्रभाग द्वारा चलाए जा रहे 'श्रेष्ठ समाज की स्थापना में आध्यात्मिकता का महत्व' अभियान के सागर पहुंचने पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में समाजसेवियों ने सहभागिता की तथा सभी का सम्मान किया गया। इंदौर से पहुंचे अभियान यात्रा के संयोजक बीके राकेश भाई ने मुख्य वक्तव्य दिया। वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके प्रीति दीदी, बीके रानी दीदी, बीके राधेश्याम भाई, पूर्व विधायक सुनील जैन, समाजसेविका निधि जैन, सागर लायंस रोटरी क्लब के सचिव सुनील कुमार, सागर क्षेत्र की संचालिका बीके छाया दीदी, बीके नीलम दीदी, बीके लक्ष्मी दीदी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

भोपाल: नारी शक्ति सम्मान समारोह आयोजित



शिव आमंत्रण, भोपाल। ब्रह्माकुमारीज ब्लेसिंग हाउस, भोपाल में सशक्त नारी-संस्कारित परिवार, समृद्ध समाज विषय पर संगोष्ठी एवं नारी शक्ति सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम ब्रह्माकुमारीज ब्लेसिंग हाउस, भोपाल एवं महिला प्रभाग, राजयोग शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हुआ। संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह के अवसर पर ब्लेसिंग हाउस की निदेशिका बीके डॉ. रीना दीदी ने कहा कि नारी परिवार की आधारशिला है। परिवार को संस्कारवान बनाने में नारी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। संस्कारित परिवार के आधार पर ही समाज में समृद्धि आती है। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज का महिला प्रभाग नारी को सशक्त बनाकर संस्कारित परिवार के निर्माण की दिशा में पिछले अनेक दशकों से निरंतर कार्य कर रहा है।

भाजपा भोपाल जिला उपाध्यक्ष गुंजन चौकसे ने भी अपने विचार व्यक्त किए। बाल आयोग की अध्यक्ष डॉ. निवेदिता शर्मा ने कहा कि बच्चों को शिक्षा देने के साथ-साथ हमें उन बातों को स्वयं भी अपने जीवन में उतारना चाहिए, जिनकी अपेक्षा हम बच्चों से करते हैं। उन्होंने कहा कि धार्मिक ग्रंथों एवं आध्यात्मिक साहित्य में जीवन को श्रेष्ठ बनाने की शिक्षाएं समाहित हैं। आज विज्ञान जिन बातों की खोज कर रहा है, उनका उल्लेख आध्यात्मिक साहित्य में पहले से मिलता है। कार्यक्रम में मनीष अग्रवाल, आईपीएस, डीआईजी (होमगार्ड एवं एनडीआरएफ) ने महिला सुरक्षा के विभिन्न पहलुओं की जानकारी दी। उन्होंने महिलाओं की सुरक्षा के प्रति जागरूकता और सजगता को आवश्यक बताया। मंडीदीप की पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष पूर्णिमा जैन तथा अनीता मिश्रा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस दौरान भोपाल के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़ी अनेक प्रबुद्ध एवं प्रेरणादायी महिलाएं उपस्थित रहीं।

विदेश सेवा समाचार



थाईलैंड। राजदूत पुनीत अग्रवाल ने ब्रह्माकुमारीज़ थाईलैंड के प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए आधुनिक जीवन में आध्यात्मिक उन्नति एवं ध्यान के महत्व पर संवाद किया। इस दौरान आत्मचिंतन, अंतर्मुखी बनने तथा आंतरिक शक्ति को विकसित करने की आवश्यकता पर विचार साझा किए गए।



गुयाना। गुयाना के प्रधानमंत्री से ब्रह्माकुमारीज़ प्रतिनिधिमंडल ने मुलाकात की। इस दौरान ओआरसी की निदेशिका बीके आशा दीदी ने प्रधानमंत्री ब्रिगेडियर (सेवानिवृत्त) मार्क फिलिप्स को कैंप स्ट्रीट स्थित उनके कार्यालय में परमात्म रक्षासूत्र बांधकर शुद्धता, सुरक्षा, पारस्परिक सम्मान एवं विश्व बंधुत्व की शुभकामनाएं दीं। इस दौरान आध्यात्मिक ज्ञान का आदान-प्रदान भी हुआ।



लिस्बन। रक्षाबंधन पर ब्रह्माकुमारीज़ केंद्र में भारत के राजदूत ने पहुंचे, जहां ब्रह्माकुमारी बहनों ने उन्हें परमात्म रक्षा सूत्र बांधकर प्रेम, सम्मान और आध्यात्मिक भाईचारे का संदेश दिया। उन्होंने बताया कि रक्षासूत्र पवित्रता, शांति, आत्म-अनुशासन और श्रेष्ठ जीवन जीने का संकल्प है। सभी ने अंतर्मन की शांति और परमात्मा से जुड़ाव को ही सच्ची सुरक्षा का आधार बनाने का संदेश दिया।



चीन। रक्षाबंधन पर ब्रह्माकुमारी सपना दीदी ने राजदूत विक्रम दोराईस्वामी को राखी बांधकर प्रेम, सद्भावना एवं भाईचारे का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि राखी का पवित्र बंधन केवल भाई-बहन के रिश्ते तक सीमित नहीं, बल्कि मानवता, प्रेम, शांति एवं एकजुटता का सार्वभौमिक संदेश है।



अफ्रीका। ब्रह्माकुमारीज़ की सहायक क्षेत्रीय निदेशिका प्रतिभा बहन ने लिलोंग्वे स्थित भारतीय उच्चायोग में उच्चायुक्त अमराराम गुजर से भेंट की। उन्होंने उच्चायुक्त के साथ उनकी धर्मपत्नी एवं अधिकारियों को राखी बांधकर प्रेम, पवित्रता, करुणा एवं सद्भाव का संदेश दिया। उन्होंने बताया कि राजयोग ध्यान के माध्यम से ब्रह्माकुमारीज़ आत्मिक शक्ति एवं आंतरिक शांति का संदेश देती हैं।



संयुक्त राष्ट्र। ब्रह्माकुमारीज़ बहनों ने संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी प्रतिनिधि हरीश पर्वथनेनी को रक्षा सूत्र बांधकर स्नेह, विश्वास, सम्मान एवं पवित्रता का संदेश दिया और रक्षाबंधन के आध्यात्मिक महत्व से अवगत कराया। इस अवसर पर उप-स्थायी प्रतिनिधि सहित मिशन के कई अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।



उद्योग-व्यापार महासम्मेलन आयोजित

व्यवसाय में धर्म और सेवा के समावेश से मिलेगी शांति व सफलता : पद्मश्री सवजी भाई ढोलकिया

शिव आमंत्रण, नवा रायपुर, छत्तीसगढ़।



प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के उद्योग एवं व्यापार प्रभाग द्वारा नवा रायपुर सेक्टर-20 में स्थित शांति शिखर के भव्य सभागार में अखिल भारतीय उद्योगपति एवं व्यापारी महासम्मेलन का आयोजन किया गया। विषय था- सचेत पूंजीवाद-दिशाहीन दुनिया में मकसद के साथ प्रॉफिट। इसमें क्षेत्र के प्रमुख उद्योगपतियों, व्यवसायियों और प्रबुद्ध नागरिकों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

सम्मेलन के मुख्य वक्ता हरि कृष्णा एक्सपोर्टस सूरत के फाउण्डर एवं पद्मश्री से सम्मानित मशहूर हीरा व्यापारी सवजी भाई ढोलकिया ने कहा कि हमें अलग से धर्म करने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि व्यवसाय में ही धर्म और सामाजिक सरोकार को जोड़ने की जरूरत है। अपनी अनोखी कार्यशैली और कर्मचारियों को कार व मकान आदि उपहार स्वरूप देने के लिए चर्चित प्रसिद्ध पद्मश्री ढोलकिया ने बताया कि केवल धन संचय करने से प्रेरणा नहीं मिलती, बल्कि देने की भावना से जीवन में वास्तविक खुशी और आनंद मिलता है।

उन्होंने अपने जीवन और व्यापार के व्यावहारिक अनुभव साझा किए और कहा कि जल संरक्षण व पर्यावरण संवर्धन के संकल्प के तहत वे अब तक 208 बड़े सरोवरों (तालाबों) का निर्माण करवा चुके हैं। उन्होंने उद्योगपतियों से आह्वान करते हुए कहा कि हर व्यक्ति को अपनी संपत्ति, समय, समझ और शरीर (श्रम) का कम से कम दस प्रतिशत हिस्सा समाज और राष्ट्र हित में योगदान करना चाहिए।

विराज प्रोफाइल्स प्रालि मुम्बई के चेयरमैन नीरज राजा कोचर ने कहा कि वह अपने कर्मचारियों को वर्कर नहीं बल्कि अपना परिवार मानकर चलते हैं। उन्होंने लोगों से राजयोग अपनाने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि सुबह और शाम को थोड़ा समय निकालकर राजयोग मेडिटेशन अवश्य करें। आज के भागदौड़ और डिजिटल डिस्ट्रेक्शन वाले दौर में ध्यान (राजयोग) एक पोर्टेबल चार्जर की तरह काम करता है।

वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्रह्माकुमारी क्रीना दीदी ने बताया कि 1936 के दशक में संस्थान के संस्थापक ब्रह्मा बाबा सिंध-हैदराबाद के एक प्रसिद्ध और सफल हीरा व्यापारी थे। जीवन के सर्वोच्च शिखर पर होते हुए भी उन्होंने आत्म-रूपांतरण का मार्ग चुना और स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन का दिव्य संदेश दिया। सच्ची लीडरशीप दूसरों पर शासन करना नहीं बल्कि स्वयं के जीवन में परिवर्तन लाकर दूसरों को प्रेरित करना है।

अतिथियों का रायपुर संचालिका ब्रह्माकुमारी सविता दीदी ने स्वागत किया। सम्मेलन को छत्तीसगढ़ राज्य केन्द्रीय औद्योगिक विकास निगम के अध्यक्ष राजीव अग्रवाल, मुम्बई के ब्रह्माकुमार हरीश भाई, अविनाश ग्रुप के आनन्द सिंघानिया, भिलाई केन्द्र की निदेशिका ब्रह्माकुमारी आशा दीदी, सारडा मिनरल्स के चेयरमैन कमल सारडा, गोयल टीएमटी के वीरेन्द्र गोयल, कैट के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अमर पारवानी ने भी सम्बोधित किया। कुमारी शारदा नाथ ने स्वागत गीत प्रस्तुत कर भाव विभोर कर दिया। बाल कलाकारों द्वारा स्वागत नृत्य पेश किया। संचालन ब्रह्माकुमारी रश्मि दीदी ने किया।



अंबिकापुर, छग। शिक्षक दिवस पर ब्रह्माकुमारीज के शिक्षा प्रभाग द्वारा 'विकसित भारत के निर्माण में शिक्षकों की भूमिका' विषय पर संगोष्ठी एवं शिक्षक सम्मान समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय, सरगुजा के कुलपति डॉ. राजेन्द्र लखपाले मुख्य अतिथि रहे। संयुक्त संचालक डॉ. राजेश कुमार सिंह, जिला शिक्षा अधिकारी डॉ. दिनेश कुमार झा, इंजीनियरिंग कॉलेज के प्राचार्य डॉ. आर.एन. खरे, पीजी कॉलेज के प्राचार्य डॉ. अनिल कुमार सिन्हा, श्री साईं बाबा कॉलेज के प्राचार्य राजेश श्रीवास्तव, पॉलिटेक्निक कॉलेज के प्राचार्य आर.जे. पाण्डेय, डायट प्राचार्य के.सी. गुप्ता, सरस्वती ज्ञान महाविद्यालय की प्राचार्य श्रद्धा मिश्रा एवं ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र संचालिका बीके विद्या दीदी सहित अनेक शिक्षक उपस्थित रहे।

शिक्षक दिवस पर सेमीनार आयोजित



राजगढ़, ब्यावरा, मप्र। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र में शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में 'विकसित भारत के निर्माण में शिक्षक की भूमिका' विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ कॉलेज प्रिंसिपल विपिन खरे, पूर्व विधायक रघुनंदन शर्मा, ब्रह्माकुमारी मधु दीदी, जिला प्रौढ़ शिक्षा अधिकारी केएन गुप्ता, डाइट प्राचार्य शीला पाटोदिया, एक्सीलेंस स्कूल प्राचार्य महेश गुप्ता, सरस्वती शिशु मंदिर प्राचार्य महेंद्र सोलंकी एवं सेवानिवृत्त शिक्षक राजेंद्र जोशी ने दीप प्रज्वलित कर किया।

नई राहें



बीके पुष्पेंद्र, संपादक
शिव आमंत्रण, शांतिवन, आबू रोड

व्यावहारिक समझ (कॉमनसेंस)

शिव आमंत्रण, आबूरोड। व्यावहारिक समझ, सामान्य बुद्धि या कॉमनसेंस। जीवन की गाड़ी को संतुलित, सुरक्षित और सफल रूप से चलाने के लिए यह अनिवार्य शर्त है। शिक्षा हमें जानकारी देती है, अनुभव हमें सीख देता है और सामान्य बुद्धि उन दोनों का जीवन में सही उपयोग करना सिखाती है। जो व्यक्ति इसका सही उपयोग करना सीख लेता है, वह जीवन के हर मोर्चे या परिस्थिति में बेहतर तालमेल बिठा पाता है।



सामान्य बुद्धि कोई विशेष डिग्री, पद या उम्र से प्राप्त होने वाली चीज नहीं है। यह जीवन के अनुभवों, परिस्थितियों को समझने की क्षमता, सही-गलत का विवेक और समय के अनुसार उचित निर्णय लेने की योग्यता से विकसित होती है। एक व्यक्ति बहुत पढ़ा-लिखा हो सकता है, लेकिन यदि वह परिस्थितियों का व्यावहारिक आकलन नहीं कर पाता तो उसका ज्ञान भी कई बार उसके काम नहीं आता है। इसके विपरीत सामान्य शिक्षा प्राप्त व्यक्ति भी अपनी सूझबूझ से कठिन परिस्थितियों का समाधान खोज सकता है।

जीवन में रोजाना की दिनचर्या में छोटी-छोटी ऐसी बातें होती हैं जिन्हें हम कई बार नजर अंदाज कर देते हैं, लेकिन हमारी लापरवाही कहें या नजर अंदाज करने से वही छोटी बात सामने वाले के लिए बड़ी परेशानी का कारण बन जाती है। व्यावहारिक समझ का मूल्यों से गहरा संबंध है। मूल्यनिष्ठ, सिद्धांत वादी व्यक्ति में औसत लोगों की तुलना में उच्च समझ होती है। कोई हमारी आलोचना करता है, बात नहीं मानता है या अचानक कोई समस्या सामने खड़ी हो जाती है। ऐसे समय में तुरंत प्रतिक्रिया देने के बजाय कुछ क्षण रुककर सोचना बहुत आवश्यक है। सामान्य बुद्धि हमें सिखाती है कि हर बात का जवाब तुरंत देना जरूरी नहीं है।

परिणामों के बारे में सोचना जरूरी : व्यावहारिक समझ का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष है- परिणामों के बारे में सोचना। कोई भी निर्णय लेने से पहले यह विचार करना कि इसके आगे क्या परिणाम हो सकते हैं, हमें अनेक परेशानियों से बचा सकता है। उदाहरण के लिए- बिना सोचे किसी व्यक्ति पर विश्वास करना, भावनाओं में आकर पैसा खर्च करना या किसी संदेश को सत्यापित किए बिना आगे भेज देना भविष्य में समस्या पैदा कर सकता है। सामान्य बुद्धि कहती है- पहले सोचें, फिर निर्णय लें। सामान्य बुद्धि केवल बाहरी परिस्थितियों को समझने तक सीमित नहीं है। यह स्वयं को समझने से भी जुड़ी है। हमें अपनी क्षमताओं, सीमाओं और आवश्यकताओं का ज्ञान होना चाहिए। हर व्यक्ति हर काम में श्रेष्ठ नहीं हो सकता। अपनी कमजोरी को स्वीकार करके उचित व्यक्ति से सहायता लेना भी बुद्धिमानी है। कई बार अहंकार व्यक्ति को यह मानने नहीं देता कि उसे किसी की मदद की आवश्यकता है। परिणामस्वरूप छोटी समस्या बड़ी बन जाती है। सामान्य बुद्धि हमें विनम्रता के साथ यह स्वीकार करना सिखाती है कि आवश्यकता पड़ने पर सलाह लेना कमजोरी नहीं, समझदारी है।

परिवार में व्यावहारिक समझ की बड़ी भूमिका : परिवार और सामाजिक जीवन में भी व्यावहारिक समझ की बड़ी भूमिका है। रिश्ते केवल सही होने से नहीं, बल्कि एक-दूसरे को समझने से चलते हैं। कई बार हम अपनी बात को सही साबित करने के लिए सामने वाले की भावनाओं को नजरअंदाज कर देते हैं। सामान्य बुद्धि यह समझाती है कि हर सही बात हर समय और हर तरीके से कहना जरूरी नहीं। बात सही हो, लेकिन तरीका गलत हो तो उसका प्रभाव भी गलत हो सकता है। इसलिए शब्दों का चयन, समय की पहचान और सामने वाले की भावनाओं का सम्मान करना आवश्यक है।

सामान्य बुद्धि का संबंध विवेक से है : आध्यात्मिक दृष्टि से देखें तो सामान्य बुद्धि का संबंध विवेक से है। जब मन शांत होता है तो व्यक्ति परिस्थितियों को अधिक स्पष्टता से देख पाता है। अशांत मन तुरंत निष्कर्ष निकालता है, जबकि शांत मन विचार करता है। राजयोग ध्यान से मन स्थिर होता है। जब मन पर भावनाओं का अत्यधिक दबाव नहीं होता, तब व्यक्ति सही और गलत के बीच बेहतर अंतर कर सकता है। सामान्य बुद्धि का अर्थ यह भी नहीं कि हम हर परिस्थिति में बिल्कुल सही निर्णय ही लें। मनुष्य से गलतियां होना स्वाभाविक है। समझदारी यही है कि गलती होने के बाद उससे सीख ली जाए। जो अपनी गलतियों को स्वीकार करके उनमें सुधार करता है, उसकी व्यावहारिक बुद्धि लगातार विकसित होती जाती है। ज्ञान हमें बताता है कि क्या संभव है, लेकिन व्यावहारिक बुद्धि यह तय करने में मदद करती है कि क्या करना उचित है। इसलिए जीवन में केवल अधिक ज्ञान अर्जित करने का प्रयास न करें, बल्कि उस ज्ञान को सही समय पर सही तरीके से प्रयोग करने की क्षमता भी विकसित करें। कुछ क्षण रुकें, सोचें, परिस्थितियों को समझें, परिणामों पर विचार करें और फिर निर्णय लें। यही सामान्य बुद्धि है और यही व्यावहारिक समझ जीवन को अनावश्यक उलझनों से बचाकर सहज, सफल और सुखद बना सकती है।

जीवन प्रबंधन



बीके शिवानी दीदी
जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ, अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर और ब्रह्माकुमारीज़ की टीवी ऑइकॉन, गुरुग्राम, हरियाणा

खुशी परिस्थितियों में नहीं, हमारे दृष्टिकोण और विचारों में छिपी है

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

आज हर व्यक्ति सुखी और खुशनुमा जीवन चाहता है। हम सोचते हैं कि अच्छी नौकरी मिल जाए, पर्याप्त धन हो, परिवार में सब हमारी इच्छा के अनुसार चलें, स्वास्थ्य अच्छा रहे और जीवन में कोई परेशानी न आए, तभी हम खुश रहेंगे। लेकिन वास्तविकता यह है कि इन सबके होते हुए भी मनुष्य कभी-कभी भीतर से उदास और तनावग्रस्त रहता है। वहीं कुछ लोग सीमित साधनों और अनेक चुनौतियों के बीच भी मुस्कुराते हुए जीवन जीते हैं।

वास्तविकता यह है कि खुशी किसी बाहरी परिस्थिति की देन नहीं है। खुशी हमारी आंतरिक स्थिति है। परिस्थितियां हमारे नियंत्रण में नहीं होतीं, लेकिन परिस्थितियों के प्रति हमारा दृष्टिकोण और हमारे विचार हमारे हाथ में होते हैं। जब हम अपने मन को बदलना सीख लेते हैं, तब जीवन को खुशनुमा बनाना भी सीख जाते हैं।

विचार ही जीवन की दिशा तय करते हैं

हमारे जीवन में घटने वाली घटनाओं से अधिक महत्वपूर्ण है कि हम उनके बारे में क्या सोचते हैं। एक ही परिस्थिति में दो व्यक्ति अलग-अलग प्रतिक्रिया दे सकते हैं, क्योंकि दोनों के विचार अलग होते हैं। यदि कोई व्यक्ति हमारे साथ कठोरता से बात करता है और हम तुरंत सोचते हैं, 'यह मेरा अपमान कर रहा है' तो मन में क्रोध और दुख उत्पन्न होगा। लेकिन यदि हम सोचें, 'शायद वह स्वयं किसी परेशानी में है, मुझे शांत रहना है, तो वही परिस्थिति हमारे मन की शांति को नहीं छीन पाएगी। इसलिए खुशनुमा जीवन के लिए विचारों की गुणवत्ता बदलना जरूरी है। नकारात्मक विचारों को बार-बार दोहराने के बजाय सकारात्मक और शक्तिशाली संकल्पों का अभ्यास करें।

अपेक्षाएं कम, स्वीकारभाव अधिक

जीवन में तनाव और दुख का एक बड़ा कारण है- अपेक्षाएं। हम चाहते हैं कि हर व्यक्ति हमारे अनुसार व्यवहार करे। पति-पत्नी एक-दूसरे से, माता-पिता बच्चों से और बच्चे माता-पिता से अनेक अपेक्षाएं रखते हैं। जब अपेक्षा पूरी नहीं होती तो शिकायत शुरू हो जाती है। शिकायत धीरे-धीरे संबंधों में दूरी और मन में अशांति पैदा करती है। खुशनुमा जीवन के लिए स्वीकारभाव बहुत आवश्यक है। स्वीकारभाव का अर्थ गलत बात को सही मान लेना नहीं है। इसका अर्थ है- पहले परिस्थिति को स्वीकार करना, फिर शांत मन से समाधान करना। हम किसी व्यक्ति को तुरंत नहीं बदल सकते, लेकिन अपनी प्रतिक्रिया अवश्य बदल सकते हैं। यही आंतरिक शक्ति है।

तुलना छोड़ें, स्वयं को स्वीकारें

आज सोशल मीडिया के दौर में तुलना बहुत बढ़ गई है। किसी के पास बड़ा घर है, किसी के पास महंगी गाड़ी, किसी का करियर अच्छा है, किसी के बच्चे सफल हैं। दूसरों का जीवन देखकर हम अपने जीवन को कम समझने लगते हैं। लेकिन हमें याद रखना चाहिए कि हम किसी के जीवन का केवल बाहरी हिस्सा देख रहे हैं। हर व्यक्ति की अपनी यात्रा है। अपनी तुलना कल के स्वयं से करें, किसी और से नहीं। आज यदि हम कल से थोड़ा अधिक शांत, प्रेमपूर्ण और सकारात्मक हैं, तो यही वास्तविक प्रगति है।

संबंधों में खुशी कैसे बनाए रखें?

खुशहाल जीवन का सबसे बड़ा आधार मधुर संबंध हैं। लेकिन संबंधों में मधुरता केवल सामने वाले से नहीं मिलती, हमें स्वयं भी मधुर बनना पड़ता है। किसी की गलती देखने से पहले उसकी अच्छाई देखें। जवाब देने से पहले एक क्षण रुकें। क्रोध में बोले गए शब्द वर्षों का संबंध खराब कर सकते हैं। कभी-कभी सही होना महत्वपूर्ण नहीं होता, बल्कि संबंध को बचाना महत्वपूर्ण होता है। इसका अर्थ यह नहीं कि हम हर गलत बात स्वीकार कर लें, बल्कि यह है कि सत्य को भी प्रेम और सम्मान के साथ व्यक्त करें। हर दिन परिवार के किसी सदस्य की एक विशेषता की प्रशंसा करें। छोटी-सी प्रशंसा भी घर के वातावरण को बदल सकती है।



मन को हल्का रखें

अतीत की घटनाओं को पकड़कर रखना खुशी का सबसे बड़ा बाधक है। किसी ने हमें दुख दिया, किसी ने विश्वास तोड़ा या किसी ने हमारे साथ अन्याय किया- इन घटनाओं को बार-बार याद करते रहने से पीड़ा कम नहीं होती, बल्कि बढ़ती है। क्षमा करना दूसरों पर उपकार नहीं, अपने मन पर उपकार है। जब हम क्षमा करते हैं, तब मन पुराने बोझ से मुक्त होता है। जो बीत गया, उसे अनुभव बनाएं, बोझ नहीं। हर दिन एक नई शुरुआत करने का अवसर है।

खुशी को बाहर नहीं, भीतर खोजें

हम अक्सर अपनी खुशी की जिम्मेदारी दूसरों को दे देते हैं। कोई हमारी प्रशंसा करे तो हम खुश, कोई आलोचना कर दे तो दुखी। किसी ने हमारी बात मान ली तो अच्छा लगा, किसी ने विरोध किया तो मन खराब हो गया। इस प्रकार हमारा मन दूसरों के व्यवहार के अनुसार चलता रहता है। जब हमारी खुशी किसी व्यक्ति या परिस्थिति पर निर्भर होती है, तब हम वास्तव में अपनी खुशी की चाबी किसी दूसरे के हाथ में दे देते हैं। हमें यह चाबी वापस अपने हाथ में लेनी होगी। हर सुबह स्वयं से कहें 'मेरी खुशी मेरी जिम्मेदारी है। मैं शांत, खुश और शक्तिशाली आत्मा हूं। ऐसे सकारात्मक संकल्प धीरे-धीरे हमारे मन की दिशा बदलने लगते हैं।

राजयोग से मन को शक्ति दें

राजयोग मेडिटेशन में आत्मा स्वयं को शरीर से अलग एक चेतन, शांत और पवित्र सत्ता के रूप में अनुभव करती है तथा परमपिता परमात्मा शिव से मानसिक संबंध जोड़ती है। जब मन परमात्मा की स्मृति में जुड़ जाता है, तो भीतर शांति, प्रेम और शक्ति का अनुभव होने लगता है। इससे परिस्थितियों का सामना करने की क्षमता बढ़ती है। दिन में कुछ मिनट अपने लिए निकालें। शांत होकर बैठें और अनुभव करें- मैं शांत आत्मा हूं। मैं प्रकाश स्वरूप आत्मा हूं। परमात्मा मेरा पिता है। उनका प्रेम और शक्ति मेरे साथ है। इस प्रकार के सकारात्मक चिंतन से मन धीरे-धीरे स्थिर और प्रसन्न बनने लगता है।

वर्तमान में जीना सीखें...

आज को पूरी तरह जीएं। भोजन करते समय भोजन का आनंद लें, परिवार के साथ हों तो मोबाइल से दूर रहकर परिवार के साथ रहें और कार्य करते समय पूरे मन से कार्य करें। वर्तमान में जीने की कला ही जीवन को सुंदर बनाने की कला है। खुशी ऐसी संपत्ति है जिसे बांटने से वह कम नहीं होती, बल्कि बढ़ती है। किसी के चेहरे पर मुस्कान लाना, किसी की सहायता करना, किसी दुखी व्यक्ति को कुछ क्षण प्रेम से सुन लेना- ये छोटे-छोटे कर्म हमारे जीवन को भी आनंद से भर देते हैं। जब हमारा ध्यान केवल मुझे क्या मिला? से हटकर मैं दूसरों को क्या दे सकता हूं? पर जाता है, तब भीतर एक विशेष संतुष्टि का अनुभव होता है।

समस्या- समाधान

समस्या को नहीं, स्वयं को देखें

राजयोगी बीके सूर्य
वरिष्ठ राजयोग शिक्षक



शिव आमंत्रण, आबू रोड/राज.।

जब कोई समस्या आती है तो सामान्यतः हमारा मन तुरंत उसी समस्या के बारे में सोचने लगता है। हम कहते हैं यह मेरे साथ ही क्यों हुआ? अब क्या होगा? मैं इसे कैसे संभालूंगा? यही विचार समस्या को और बड़ा बना देते हैं। राजयोगी दृष्टि यह है कि पहले समस्या को नहीं, स्वयं को देखें। एक क्षण रुकें और अनुभव करें- मैं आत्मा हूं, शांत और शक्तिशाली आत्मा हूं। यह परिस्थिति मेरे सामने है, लेकिन मैं परिस्थिति नहीं हूं। बस यह छोटा-सा अंतर बहुत बड़ी शक्ति देता है।

मन को विराम देना सीखें-

समस्या के समय सबसे पहले मन की गति को रोकना आवश्यक है। तुरंत प्रतिक्रिया देने के बजाय कुछ क्षण शांत हो जाएं। आंखें खुली हों तब भी मन को भीतर की ओर मोड़ा जा सकता है। मन में धीरे-धीरे संकल्प करें- मैं आत्मा हूं... शांत स्वरूप हूं... मैं इस परिस्थिति का साक्षी हूं... परमपिता परमात्मा शिव मेरे साथ हैं... उनकी शक्ति मेरे अंदर आ रही है... कुछ क्षण इस अनुभव में रहें। जब मन शांत होगा, तभी बुद्धि सही निर्णय ले पाएगी। राजयोग का सबसे बड़ा आधार है- परमात्म-स्मृति। स्वयं को आत्मा समझकर परमात्मा शिव को अपना परमपिता, शिक्षक और सच्चा साथी अनुभव करें। कल्पना नहीं, अनुभव करें कि ऊपर परमधाम में रहने वाले परमपिता परमात्मा शिव की शांति और शक्ति की किरणें आत्मा पर पड़ रही हैं। मैं उनकी संतान हूं। उनके गुण और शक्तियां मुझे प्राप्त हो रही हैं। जब आत्मा को परमात्मा का साथ अनुभव होता है तो अकेलेपन, भय और असुरक्षा की भावना कम होने लगती है।

समस्या नहीं, समाधान देखें

राजयोगी का मन समस्या को बार-बार दोहराने में अपनी शक्ति खर्च नहीं करता। वह स्वयं से पूछता है- इस परिस्थिति में मेरा श्रेष्ठ कर्म क्या है? चिंता कहती है- क्या होगा? राजयोग कहता है- जो होगा, देखा जाएगा, अभी मुझे क्या करना है? इसलिए परिस्थिति आने पर तीन चरण अपनाएं- रुकें, सोचें और फिर श्रेष्ठ कर्म करें। यदि कोई व्यक्ति हमारे साथ कठोर व्यवहार करता है तो तुरंत जवाब देने के बजाय एक सेकंड रुकें। स्वयं को आत्मा समझें और सामने वाले को भी आत्मा के रूप में देखें। मन में शुभभावना रखें। संकल्प करें- यह आत्मा भी अपनी यात्रा में आगे बढ़ रही है। मुझे अपनी शांति नहीं खोनी है। यह अभ्यास क्रोध की ऊर्जा को शांति की शक्ति में बदल सकता है।

भय और चिंता में योग

जब भविष्य को लेकर चिंता हो तो स्वयं से कहें- भविष्य अभी आया नहीं है। मेरे पास वर्तमान है और इस क्षण परमात्मा मेरे साथ हैं। कुछ मिनट परमात्म-स्मृति में रहें। अनुभव करें कि मैं सुरक्षित हूं, समर्थ हूं और परमात्म शक्ति मेरे साथ है। इसके बाद जो व्यावहारिक कदम आवश्यक हो, वह शांत बुद्धि से उठाएं। राजयोगी के लिए परिस्थिति केवल परेशानी नहीं, बल्कि अभ्यास का अवसर भी है। यदि कोई व्यक्ति हमें परेशान करता है तो वह हमारी सहनशक्ति का अभ्यास करा रहा है। यदि कोई परिस्थिति हमारी योजना के अनुसार नहीं चलती तो वह हमें समायोजन और स्वीकारभाव सिखा रही है। इस दृष्टि से परिस्थिति शत्रु नहीं रहती, शिक्षक बन जाती है।

दिनभर का अभ्यास

राजयोग केवल मेडिटेशन हॉल में बैठने तक सीमित नहीं है। दिन में कई बार एक मिनट रुककर स्वयं को चेक करें- मैं कौन हूं? मेरा मन कैसा है? मेरी बुद्धि कहां लगी है? काम करते हुए, यात्रा करते हुए, बातचीत के बीच भी परमात्मा को याद किया जा सकता है। हाथ कर्म में और बुद्धि परमात्मा की याद में- यही कर्मयोग की सुंदर स्थिति है। जब भी कोई बड़ी समस्या सामने आए, मन में दृढ़ता से कहें- मैं शक्तिशाली आत्मा हूं। परिस्थिति बड़ी नहीं, मेरी आंतरिक शक्ति बड़ी है। परमात्मा मेरे साथ हैं। मुझे घबराना नहीं है, मुझे समाधान बनना है। मैं शांत रहकर श्रेष्ठ कर्म करूंगा। हमें समस्याओं से भागना नहीं है, बल्कि ऐसी आंतरिक शक्ति प्राप्त करना है कि समस्याएं हमारे मन की शांति को छीन न सकें।

RNI No.: RAJHIN/2013/53539, Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2024-26. Posting at Shantivan- 307510 (Abu Road)
Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2024-26, Posting on 17 to 20 of Each Month, Published on 14 Sep. 2026
» प्रकाशक व मुद्रकः करुणाकर शेट्टी द्वारा डीबी कार्प लिमिटेड भास्कार प्रिंटिंग प्रेस, शिवदासपुरा, टोंक रोड, जयपुर से मुद्रित एवं शिव आमंत्रण, ब्रह्माकुमारीज़ शांतिवन, आबू रोड, राजस्थान से प्रकाशित » प्रधान संपादकः बीके कोमल » संपादकः बीके पुष्पेन्द्र